बिहार इंटर परीक्षा -2026

CLASS-12th

DISHA ONLINE CLASSES

HINDI दिगंत

SUBJECTIVE NOTES

CHAPTER WISE & TOPIC WISE

Sanjay Sir

बिहार बोर्ड का सबसे विश्वसनीय संस्थान

Helpline:- 7700879453

गद्यखंड
1. बातचीत

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:-

1. 'बातचीत' शीर्षक निबंध का सारांश लिखिए। 2023

उत्तर- बातचीत शीर्षक निबंध के निबंधकार बालकृष्ण भट्ट जी हैं। बालकृष्ण भट्ट भारतेन्दु युग के कवि हैं। इस पाठ में बातचीत करने की उत्तम शैली को बताया गया है। कवि कहते हैं ईश्वर ने मनुष्य को वरदान के रूप में अनेक प्रकार की शक्तियाँ दिये हैं, उनमे से एक वाक्-शक्ति भी है। यदि हममे वाक्-शक्ति न होती तो सारा सृष्टि गूँगा प्रतीत होता। सब लोग लुंज-पुंज हो जाते। अवाक् होने के कारण सुख-दुख का अनुभव भी नही कर पाते, कह-सून नहीं पाते और स्पीच का उद्देश्य सुननेवालों के मन में जोश और उत्साह पैदा कर देना है। जबकि घरेलू बातचीत मन रमाने का ढंग है। जहाँ आदमी की अपनी जिंदगी मजेदार बनाने के लिए खाने, पीने, चलने फिरने आदि की जरूरत है, वहाँ बातचीत की भी अत्यंत आवश्यकता है। जो कुछ मवाद् या धुआँ जमा रहता है, वह बातचीत के जरिए भाप बनकर बाहर निकल जाता है। सच है जबतक मनुष्य बोलता नहीं तब तक उसका गुण-दोष प्रकट नहीं होता। बेन जानसन का यह कहना है कि बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है। एडीसन का कहना है असल बातचीत सिर्फ दो व्यक्तियों में हो सकती है। तीन लोगों के बातचीत को अँगूठी का नग कहा गया है। चार लोगों की बातचीत को फॉर्मेलिटि कहा गया है। चार से अधिक लोगों के बातचीत को राम-रमौवल कहा गया है। यूरोप के लोगो में बातचीत करने की एक कला होती है जिसे आर्ट ऑफ कन्वरसेशन कहा जाता है। बातचीत करने का सबसे उत्तम तरीका है खुद से बाते करना। यह साधनों का मूल है, शक्ति परम पूज्य मंदिर है।

2. अगर हममें वाक्शक्ति न होती, तो क्या होता? 'बातचीत' शीर्षक निबंध के आधार पर उत्तर दें। 2022

उत्तर- बातचीत शीर्षक निबंध के निबंधकार बालकृष्ण भट्ट जी हैं। इस निबंध के माध्यम से निबंधकार बातचीत करने की उत्तम शैली को बताते हैं। ईश्वर ने मनुष्य को वरदान के रूप में अनेक प्रकार की शक्तियाँ दिये हैं, उनमें से सबसे महत्वपूर्ण वाक्-शक्ति है| अर्थात बोलने की शक्ति। अगर हममे वाक्-शक्ति न होती तो सारी सृष्टि गूँगी प्रतीत होती। सब लोग लुंज-पुंज हो जाते और किसी कोने में बैठा दिए होते और जो कुछ सुख-दुख का अनुभव हम अपनी दूसरी इंद्रियों के द्वारा करते हैं अवाक् होने के कारण नही कर सकते और कह-सून नहीं पाते।

3. मनुष्य की बातचीत का उत्तम तरीका क्या हो सकता है? इसके द्धारा वह कैसे अपने लिए सर्वथा नवीन संसार की रचना कर सकता है?

उत्तर- ईश्वर ने मनुष्य को सबसे बड़ी शक्ति वाक्-शक्ति दी है। जिससे विचारों का आदान-प्रदान आसानी से होता है। भट्ट जी के अनुसार बातचीत करने का सबसे उत्तम तरीका है स्वयं से बाते करने की शक्ति को बढ़ाना। हमारी भीतरी मनोवृति प्रतिक्षण नए-नए रंग दिखाया करती है वह संसार का एक बड़ा आइना है। मनुष्य को सर्वथा नवीन संसार की रचना के लिए जिहवा जो कतरनी के समान स्वच्छंद चलती है इसपर काबू करना चाहिए। जिससे बड़े-से-बड़े शत्रु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न: -

1. सच है, जबतक मनुष्य बोलता नहीं, तब तक उसका गुण दोष प्रकट नहीं होता। 2011

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित बातचीत शीर्षक निबंध पाठ से लिया गया है। लेखक का कहना है कि अपने अन्दर की भाव दूसरे के सामने प्रकट करने के लिए और उसका आशय ग्रहण करने के लिए शब्दो की आवश्यकता होती है यह सत्य है कि जबतक मनुष्य बोलता नहीं है तबतक उसका गुण-दोष प्रकट नही होता है। बल्कि ढ़का ही रह जाता है।

2. "जो कुछ मवाद या धुआँ जमा रहता है, वह बातचीत के जरिए भाप बनकर बाहर निकल पड़ता है।" 2024

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित बातचीत शीर्षक निबंध पाठ से लिया गया है। लेखक का कहना है कि मनुष्य के मन में अनेक प्रकार के भाव उठते रहते हैं। कभी हर्ष, कभी विषाद, कभी करूणा तो कभी दया के। जो बातचीत के जरिए अपने मन को हल्का करते है। अतः जो कुछ मवाद या धुआँ जमा रहता है, वह बातचीत के जरिए भाप बनकर बाहर निकल जाता है।

3. जहाँ आदमी को अपनी जिंदगी मजेदार बनाने के लिए खाने - पीने, चलने - फिरने आदि की जरूरत है, वहाँ बातचीत की भी उसको अत्यंत आवश्यकता है।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित बातचीत शीर्षक निबंध पाठ से लिया गया है। लेखक का कहना है कि वाक्-शक्ति के विना तो पूरा श्रृष्टि हीं गूंगा है। यदि हम बातचीत नहीं

करेंगे तो एक-दूसरे का दूख-सुख का अनुभव नहीं कर पायेंगे। कह सून नहीं पायेंगे। अतः आदमी को अपनी जिन्दगी मजेदार बनाने के लिए खाने-पीने, चलने-फिरने आदि की जरूरत है वहाँ बातचीत की भी उसको अत्यंत आवश्यकता है।

4. हमारी भीतरी मनोवृति प्रतिक्षण नए-नए रंग दिखाया करती है, वह प्रपंचात्मक संसार का एक बड़ा भारी आइना है, जिसमें जैसी चाहो वैसी सूरत देख लेना कोई दुर्घट बात नहीं है।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियाँ बालकृष्ण भट्टा द्वारा रचित बातचीत शीर्षक निबंध पाठ से लिया गया है। लेखक का कहना है कि ईश्वर ने मनुष्य को वरदान के रूप में वाक्-शक्ति दिये है। पर बातचीत करने का सबसे उत्तम तरीका है स्वयं से बाते करना। जब मनुष्य भीतरी मनोवृति का प्रयोग करेंगे तो यह प्रतिक्षण नए-नए रंग दिखाया करती है यह संसार का सबस बड़ा आइना है जिसमें जब चाहो वैसी सूरत देख लो। मनुष्य को बस अपनी जिह्वा पर काबू रखना चाहिए। जिससे बड़े से बड़े शत्रु पराजित हो जाते है।

लघु उत्तरीय प्रश्न:

1. 'ऑर्ट ऑफ कनवरसेशन' क्या है?

उत्तर- योरोप के लोगों में बात करने की कला को आर्ट ऑफ कनवरसेशन कहते है। यहाँ के लोग ऐसे चतुराई के प्रसंग छेड़ देते है। जिसे सुनकर कानों को अत्यंत सुख मिलता है। इसकी पूर्ण शोभा कव्यकला प्रवीण विद्धन्मंडली में है।

2. बातचीत के संबंध में बेन जॉनसन और एडीसन के क्या विचार है ?

उत्तर- बातचीत के संबंध में बेन जॉनसन कहते हैं कि बोलने से हीं मनुष्य के रूप का साक्षात्कर होता है एवं एडीसन कहते हैं कि असल बातचीत सिर्फ दो व्यक्तियों में हो सकती है।

3. अगर हममें वाक्-शक्ति न होती तो क्या होता? **2011, 2019**

उत्तर- अगर हममें वाक्-शक्ति न होती तो ये सारा संसार गुँगा प्रतीत होता सब लोग लुंज-पुंज से हो जाते किसी कोने में बैठा दिए होते। और अवाक् होने के कारण कुछ कह-सुन नही पाते तथा दुख-सुख का अनुभव नही कर पाते।

4. बातचीत शीर्षक पाठ में दो बुढ़ियों की बातचीत का प्रकरण क्या है? 2022

उत्तर- लेखक बालकृण्ण मट्ट के अनुसार दो बुढ़ियों की की बातचीत का मुख्य प्रकरण बहु-बेटी होती है। जिसमे बहुओं या बेटों का गिला शिकवा होता है या विरादर वालो से ऐसा बात खोद देती है जिससे लड़ाई झगड़े हो।

5. दो हमजोली सहेलियों की बातचीत में क्या स्थिति होती है? 2019

उत्तर- दो हमजोली सहेलियों की बातचीत का जायका बहुत निराली होती है। इसमें रस का समुद्र उमड़ा चला आता रहता है। इसका पूरा स्वाद उसी से पूछना चाहिए।

6. जबतक मनुष्य बोलता नहीं तबतक उसके व्यक्तित्व का कौन-सा पक्ष प्रकट नहीं होता है? 2024

उत्तर- बालकृष्ण भट्ट रचित बातचीत शीर्षक निबंध के अनुसार जबतक मनुष्य बोलता नहीं तब तक उसका गुण दोष प्रकट नहीं होता है। अपने अन्दर की भाव को दूसरे के सामने प्रकट करने के लिए बोलना ही पड़ेगा। नही तो गुण-दोष का पता नहीं चलता है।

2. उसने कहा था

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:-

1. उसने कहा था पाठ का सारांश लिखें |

उत्तर- 'उसने कहा था' कहानी के कहानीकार चन्द्रधर शर्मा गुलेरी हैं। कहानी की शुरुआत अमृतसर के भीड़ भरे बाजार से होती है। जहाँ बारह वर्ष का एक लड़का (लहनासिंह) आठ वर्ष की एक लड़की (सुबेदारनी) को तांगे के निचे आने से बचाता है। वे दोनों पहली बार एक चौक के पास दुकान पर मिलता है। पहली बार लड़का लड़की को यह कहकर छेड़ता है क्या तेरी कड़माई हो गई है ? लड़की घत् कहकर भाग जाती है। प्रेम के बीज का अंकुरण यहीं से शुरू होता है। प्रत्येक दूसरे-तीसरे दिन पर लड़का, लड़की से पूछता क्या तेरी कुड़माई हो गई है। एक दिन लड़की गुस्से में आकर कह दी हाँ मेरी मंगनी हो गई है। पच्चीस वर्ष बाद जब भारतीय सैनिक जर्मनी से युद्ध कर रहे थे तब लहनासिंह की मुलाकात हजारा सिंह से हुआ था। एक बार लहना सिंह को सुबेदार हजारा सिंह के साथ युद्ध पर जाना था। इसलिए लहनासिंह हजारा सिंह के घर पर गये तब उन्होनें वहाँ सूबेदारनी को देखा जिससे वह निःस्वार्थ प्रेम किया करते थे। तब उन्हें बचपन की याद आई। सूबेदारनी ने भी लहना सिंह को पहचान ली। और बोली युद्ध पर जा रहे हो तो मेरे पति सूबेदार हजारा सिंह और बेटा बोधा सिंह की युद्ध में रक्षा करना। लहनासिंह युद्ध में बोधा सिंह की जान बचाई और स्वंय शहीद हो गए, मरने से पहले उसने हजारा सिंह से कहा कि सूबेदारनी को कहना जो 'उसने कहा था' वो मैनें कर दिया।

2. 'उसने कहा था' कहानी का केन्द्रीय भाव क्या है?

उत्तर- 'उसने कहा था' कहानी चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा रचित है। यह एक दिव्य प्रेम कहनी है जो अमृतसर शहर से शुरू होती है। ऐसी कहानी कहीं देखने को नहीं मिलती है। आज के समाज की प्रेम कहानी शारीरिक बंधन में बंधी होती है। जबकि प्रेम का अर्थ त्याग और बलिदान से है। यह एक सात्विक प्रेम कहानी है जहाँ लहनासिंह अपनी प्रमिका के लिए कुर्बान हो जाते हैं।

3. लहना सिंह का दायित्व बोध और उसकी बुद्धि दोनों हीं स्पृहणीय है।'इस कथन की पुष्टि करें। 2025

उत्तर- लहना लिंह एक वीर सिपाही था। वह हर समय युद्ध के लिए तैयार रहता था। वह बहुत बुद्धिमान भी था। वह अपनी बुद्धि से नकली जर्मन लपटन साहब को भी पहचान लेता है और मार गिराता है। लहना सिंह दया तथा करूणा का सागर था। वह उतनी ठंड में भी अपना कम्बल बीमार बोधा सिंह को दे देता है और उसकी जान बचाता है। सूबेदारनी ने उसे जो दायित्व दी लहना सिंह उसे पूरा किया। अतः लहना सिंह का दायित्व बोध और उसकी बुद्धि दोनों हीं स्पृहणीय है।

4. पाठ से लहना और सूबेदारनी के संवादो को एकत्र करें।

उत्तर-

- ★ लहना सिंह- तेरे घर कहाँ है ?
- ★ सूबेदारनी- 'मगरे में - और तेरे,
- ★ लहना सिंह – 'माँझे में। कहाँ रहती है ?'
- ★ सूबेदारनी - अतरसिंह की बैठक में, वे मेरे मामा है।'
- ★ लहना सिंह- 'मैं भी मामा के यहाँ आया हूँ, उनका घर गुरू बजार में है।'
- ★ लहना सिंह – 'तेरी कुड़माई हो गई ?' धत!
- ★ सूबेदारनी से- एक दिन फिर पूछा उत्तर आया हाँ हो गई।
- ★ लहना सिंह- 'कब हुई ?'
- ★ सूबेदारनी- 'कल, देखते नहीं यह रेशम कढ़ा सालू।'

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न: -

1. मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति साफ हो जाती है।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति चन्द्रधर शर्मा गुलेरी रचित "उसने कहा था" कहानी के पाँचवे खंड से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कहानीकार का कहना है मरने से कुछ समय पहले सिनेमा के रील की तरह जीवन की सारी घटनाएँ एवं दृश्य नाचती है। अर्थात् स्मृति बिल्कुल साफ हो जाती है।

2. निमोनिया से मरने वाले को मुख्बे नहीं मिला करते।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति चन्द्रधर शर्मा गुलेरी रचित " उसने कहा था " कहानी से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कहानीकार का कहना है कि युद्ध क्षेत्र में बहुत ठंड है, कहीं मौत न हो जाय। निमोनिया बुखार होने का डर है। जो निमोनिया से मरता है उसे कड़वी दवा दी जाती है। मुख्बे नहीं।

2. निमोनिया से मरने वाले को मुख्बे नहीं मिला करते।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति चन्द्रधर शर्मा गुलेरी रचित " उसने कहा था " कहानी से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कहानीकार का कहना है कि युद्ध क्षेत्र में बहुत ठंड है, कहीं मौत न हो जाय। निमोनिया बुखार होने का डर है। जो निमोनिया से मरता है उसे कड़वी दवा दी जाती है। मुख्बे नहीं।

3." और अब घर जाओ तो कह देना कि मुझे जो उसने कहा था वह मैंने कर दिया।" 2015, 2016

उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति चन्द्रधर शर्मा गुलेरी रचित " उसने कहा था " कहानी से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कहानीकार का कहना है कि लहना सिंह एक वीर सिपाही था, उसने सूबेदारनी के कहने पर युद्ध में बोधा सिंह की जान बचाई और खुद शहीद हो गए, वह सूबेदार से बोला घर जाओ सूबेदारनी से कहना उसने जो कहा था वो मैने कर दिया।

4. बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति चन्द्रधर शर्मा गुलेरी रचित " उसने कहा था " कहानी से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कहानीकार का कहना है कि जिस प्रकार घोड़े को रोजाना दौड़ का अभ्यास नहीं कराया जाये तो घोड़ा बिगड़ जाता है। ठीक उसी प्रकार यदि सैनिक को युद्ध का अभ्यास न कराया जाय तो वह युद्ध करना भूल जाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न: -

1. 'उसने कहा था' कहानी कितने भागों में बंटी हुई है? कहानी के कितने भागों में युद्ध का वर्णन है?

उत्तर - 'उसने कहा था' कहानी पाँच भागों मे बँटी हुई है। इस कहानी के तीन भागों में युद्ध का वर्णन है। दूसरा, तासरा और चौथे भाग में युद्ध का वर्णन हैं।

2. बोधा सिंह कौन था?

उत्तर- बोधा सिंह 'उसने कहा था' कहानी का एक पात्र तथा सूबेदार हजारा सिंह का बेटा था।

3. 'उसने कहा था' कहानी के पात्रों का नाम लिखें।

उत्तर- 'उसने कहा था' कहानी के प्रमुख पात्र लहना सिंह, हजारा सिंह, बोधा सिंह, सूबेदारनी, कीरत सिंह, बजीरा सिंह, जर्मन लपटन, विदेशी आदि है।

4. फिरंगी मेम के बाग में क्या-क्या था?

उत्तर- फिरंगी मेम के बाग में मखमल-सी हरी धास थी। मेम फल एवं दूध की वर्षा कर देती थी।

5. लहना सिंह के प्रेम के बारे में लिखिए।

उत्तर- लहना सिंह को सूबेदारनी से बचपन में ही सच्चा प्रेम हो गया था। यह प्रेम बहुत पवित्र और निस्वार्थ था। सूबेदारनी के कहने पर ही उसने युद्ध में बोधा सिंह की जान बचाई और खुद अपनी जान दे दी। इससे पता चलता है कि लहना सिंह का प्रेम त्याग और सच्ची भावना पर आधारित था।

6. "जाड़ा क्या है, मौत है और निमोनिया से मरनेवालों को मुरब्बे नहीं मिला करते!"बजीरा सिंह के इस कथन का क्या आशय है?

उत्तर - जाड़ा का अर्थ है- भीषण ठंड। बजीरा लहना सिंह से कहता है, कहीं तुम्हें ठंड न लग जाए। युद्ध में कहीं मौत न हो जाय। निमोनिया बुखार होने का डर है। निमोनिया से मरने वाले को कड़वी दवा दी जाती है। मुख्बे नहीं।

7. लहनासिंह के चरित्र की विशेषताओं का वर्णन करें।
या लहनासिंह का परिचय अपने शब्दों में दें।

उत्तर- 'उसने कहा था' कहानी का नायक लहनासिंह हैं। जो अपने मामा के साथ अमृतसर में रहता था। वह एक वीर सिपाही था। जो निडरता के लिए जाना जाता था। वह सूबेदारनी से निःस्वार्थ प्रेम करता था, उसी के कहने पर युद्ध में बोधा सिंह की जान बचाता है और स्वयं शहीद हो जाता है।

8. लपटन साहब की जेब से क्या बरामद हुआ था?

उत्तर- लपटन साहब की जेब से बेल के बराबर आकार का तीन गोले बरामद हुआ।

9. लहना के गाँव में आया तुर्की मौलवी क्या कहता था?

उत्तर- तुर्की मौलवी कहता था कि जर्मनी वाले बड़े पंडित हैं वेद पढ़कर विमान चलाने की विद्या को जाने गये हैं। गौ हत्या भी नही करते है।

10. “कल, देखते नहीं यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू” | यह सुनते हीं लहना की क्या प्रतिक्रिया हुई ?

उत्तर- यह बात सुनते ही लहना सिंह को बहुत बड़ा झटका लगा। वह घबरा गया और गुस्से में उसने किसी को नाली में धक्का दे दिया, छावड़ीवाले को गिरा दिया, कुते को पत्थर से मारा और एक वैष्णवी महिला से टकरा गया वह उसे “अंधा” कह दी।

11. 'कहती है, तुम राजा हो, मेरे मुल्क को बचाने आये हो। वजीरा के इस कथन से किसकी ओर संकेत है?

उत्तर- कहती है, तुम राजा हो मेरे मुल्क को बचाने आये हो। वजीरा के इस कथन में “फ्रांस की मेम” की संकेत है।

3. संपूर्ण क्रान्ति

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न: -

1. संपूर्ण क्रान्ति पाठ का सारांश लिखें |

उत्तर:- “संपूर्ण क्रांति” पाठ जयप्रकाश नारायण द्वारा रचित एक एतिहासिक भाषण है। जिसे 5 जून 1974 को पटना के गांधी मैदान में दिया गया था। इसमें उन्होंने छात्रों और जनता से शांति और अनुशासन के साथ क्रांति करने का आदेश दिये थे। इस भाषण में उन्होंने कहा कि जनता भूख, महंगाई, भ्रष्टाचार और अन्याय से बहुत परेशान है। शिक्षा मिलने के बावजूद भी लोग ठोकर खा रहे हैं। केवल नारे लगाने से गरीबी नहीं मिटेगी। बल्कि हर व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी लेनी पड़ेगी। उनका उद्देश्य दलविहीन लोकतंत्र स्थापित करना था। इसलिए वे शांति पूर्वक संघर्ष कर रहे थे। उनका लक्ष्य केवल सरकार से लड़ना नहीं था, बल्कि समाज के हर अन्याय, भ्रष्टाचार और अत्याचार के खिलाफ लड़ना था। यह संघर्ष बिल्कुल निर्दलीय था।

2.संघर्ष समितियों से जयप्रकाश नारायण की क्या अपेक्षाएँ हैं?

उत्तर- जयप्रकाश नारायण की संघर्ष समितियों से निम्न अपेक्षाएँ हैं-

(i) संघर्ष समितियाँ जनता या छत्रों की होगी।
(ii) उनका काम केवल शासन करना नहीं, बल्कि समाज के हर अन्याय के विरुद्ध लड़ना होगा।
(iii) गाँव में छोटे अफसर हो या बड़े कर्मचारी, घूसखोरी के खिलाफ अवाजे उठानी होगी।
(iv) गाँव के किसानों पर कोई अत्याचार नहीं करेगा।
(v) गाँव में हो रहे सभी अन्यायों को संघर्ष समितियाँ रोकेगी।

3. जयप्रकाश नारायण के छात्र जीवन और अमेरिका प्रवास का परिचय दें। इस अवधि में कौन-कौन सी बाते आयको प्रभावित करती है?

उत्तर- छात्र जीवन- जयप्रकाश नारायण की प्रारंभिक शिक्षा घर पर हुई। इसके बाद उन्होंने पटना “के कॉलेजिएट स्कूल” में पढ़ाई की, लेकिन असहयोग आंदोलन में शामिल होने के कारण पढ़ाई छोड़ दी। बाद में उन्होंने “बिहार विद्यापीठ” से आई.एस.सी. पास किये।

अमेरिका प्रवास- जयप्रकाश नारायण के पिता जी बहुत गरीब थे, बेटे को अमेरिका भेजने में सक्षम नहीं थे। लेकिन जे. पी. सुने थे कि अमेरिका में छात्र मजदूरी करके पढ़ सकते हैं। इसलिए वे अमेरिका चले गए। वहाँ उन्होंने मजदूरी करके,

"कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी" से समाजवाद और मार्क्सवाद का अध्ययन किये। उनकी माँ बहूत बीमार थी, जिस कारण वे P.HD. पूरा नहीं कर सके और भारत लौट आए।

4. चुनाव सुधार के बारे में जयप्रकाश जी के प्रमुख सुझाव क्या है? उन सुझावों से आप कितना सहमत है?

उत्तर- **चुनाव सुधार के बारे में जयप्रकाश जी के निम्न सुझाव हैं-**

(i) मतदाता के लिए मतदान प्रक्रिया स्वच्छ और स्वतंत्र हो।
(ii) जनता को अपने प्रतिनिधि पर पूरा अधिकार हो।
(iii) चुनाव प्रक्रिया में कम से कम खर्च हो।
(iv) चुनाव के समय झूठा भाषण का प्रयोग ना हो।
(v) हमारा नेता वो काम करे जिससे लोकतंत्र का विकास हो।

5. दलविहीन लोकतंत्र और साम्यवाद मैं कैसा संबंध है? [2024]

उत्तर- दलविहीन लोकतंत्र और साम्यवाद में गहरा संबंध है। दोनों का उद्देश्य एक ऐसे समाज की स्थापना करना है जहाँ राजनीतिक दलों की आवश्यकता न हो और सभी जनता समान रूप से भाग लें सके। दलविहीन में ग्राम सभा के आधार पर प्रतिनिधि चुने जाते हैं। जबकि साम्यवाद में राज्य धीरे-धीरे खत्म हो जाता है और एक बिना दल वाला सच्चा लोकतांत्रिक समाज बनता है।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. "व्यक्ति से नहीं हमें तो नीतियों से झगड़ा है, सिद्धानों से झगड़ा हैं, कार्यों से झगड़ा है।" 2019

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति जयप्रकाश नारायण द्वारा रचित "संपूर्ण क्रांति" शीर्षक पाठ से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना हैं कि हमें इंदिरा गांधी (व्यक्ति) से नहीं, बल्कि उनके नीतियों से झगड़ा है, उनके सिद्धानों से झगड़ा हैं और उनके कार्यों से झगड़ा है। जो कार्य गलत होगी, जो पॉलिसी गलत होगी मैं उसका सदा विरोध करूगाँ।

2. अगर कोई डिमॉक्रेसी का दुश्मन है, तो वे लोग दुश्मन हैं, जो जनता के शांतिमय कार्यक्रमो में बाधा डालते हैं, उनकी गिरफ्तारियाँ करते हैं, उन पर लाठी चलाते हैं, गोलियाँ चलाते हैं।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति जयप्रकाश नारायण द्वारा रचित "संपूर्ण क्रांति" शीर्षक पाठ से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना हैं कि उस समय सरकार की नीतियाँ गलत थीं, इसलिए मैं उनका आलोचना करता हूँ। जनता को शांति से सभा करने नहीं दिया जाता था, उन्हें बलपूर्वक रोका जाता था, उनपर लाठियाँ और गोलियाँ चलाई जाती थीं। ऐसे लोग लोकतंत्र के दुश्मन हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न: -

1. जयप्रकाश नारायण की पत्नी का क्या नाम था? वे किसकी पुत्री थी? [2019, 2021]

उत्तर- जयप्रकाश नारायण की पत्नी का नाम प्रभावती देवी था। वे ब्रजकिशोर प्रसाद की पुत्री थी।

2. जयप्रकाश नारायण किस प्रकार का नेतृत्व देना चाहते थे? [2018]

उत्तर- जयप्रकाश नारायण कहते थे मुझे नेता नहीं बनना है। मैं दलविहीन लोकतंत्र की स्थापना करना चाहता हूँ। मुझे सामने खड़ा करके और कोई पिछे से 'डिक्टेट' करे। ये मुझे अच्छा नही लगता है।

3. नारायण और नेहरू की किस विशेषता का उल्लेख जयप्रकाश नारायण ने अपने भाषण में किया है? 2011

उत्तर- जयप्रकाश नारायण ने अपने भाषण में कहा की नारायण और नेहरू में एक विशेष महानता छिपी हुई थी। उनकी महानता यह था कि वे आलोचनाओं को बर्दाश्त करते थे। वें आलोचकों का सम्मान करते थे। वे सभी को समझा-बूझाकर साथ लेकर चलने में विश्वास करते थे।

4. जयप्रकाश नारायण कम्युनिस्ट पार्टी में क्यों नहीं शामिल हुए? [2023]

उत्तर- जयप्रकाश नारायण कम्युनिस्ट पार्टी में इसलिए शामिल नहीं हुए क्योंकि वे अमेरिका प्रवास के दौरान घोर कम्युनिस्ट थे। अत: वे देश लौटे तो अग्रेजों को भगाने के लिए कांग्रेस में शामिल हो गए।

5. बँधी हुई मुट्ठियों का क्या लक्ष्य है? [2023]

उत्तर- इसका लक्ष्य है- जनता की सरकार के खिलाफ और शोषितों की शोषकों के खिलाफ मुठ्ठी बांधना। और उसे इस धरती से मार भगाना।

6. जयप्रकाश नारायण के अनुसार डेमोक्रेसी का शत्रु कौन है? [2018]

उत्तर- जयप्रकाश नारायण के अनुसार डेमोक्रेसी के शत्रु वे लोग हैं, जो जनता के कार्यो में बाधा डालता है, उनकी गिरफ्तारी करते हैं, उनपर लाठी व गोली चलाते है।

7. भ्रष्टाचार की जड़ क्या है? क्या आप जे.पी. के विचार से सहमत हैं? इसे दूर करने का क्या सुझाव देंगें?

उत्तर- चुनाव का खर्च ही भ्रष्टाचार की जड़ है, क्योंकि चुनाव में करोड़ो रूपया खर्च होता हैं। जे. पी. चाहते है चुनाव का

खर्च कम होना चाहिए। और चुनाव पारदर्शिता तरीका से होना चाहिए।

8. दिनकर जी का निधन कहाँ और किन परिस्थितियों में हुआ था?

उत्तर- दिनकर जी का निधन रामनाथ गोयन के यहाँ हुआ। उन्हे वहां रात को दिल का दौड़ा पड़ा, तीन मिनट में उन्हे अस्पताल पहुँचाया गया। पर उनका हार्ट फिर से जिन्दा न हो पाया। जिस कारण वहीं निधन हो गया।

4. अर्धनारीश्वर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. अर्धनारीश्वर पाठ का सारांश लिखें |

उत्तर- अर्धनारीश्वर शीर्षक निबंध रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित है। अर्धनारीश्वर भगवान शिव और माता पार्वती का कल्पित रूप हैं, जिसका आधा अंग पुरुष और आधा स्त्री की है। नर-नारी पूर्ण रूप से समान है। परन्तु आज पुरुष अपने अंदर की स्त्री को दबाता है और स्त्री अपने अंदर की पुरुष को दबाती है। नारी की पराधीनता तब आरंभ हुई जब मानव जाती ने कृषि का आविष्कार किया था। पुरुष स्त्री को केवल आनंद का खान समझता है। और आनंदित होने के बाद मुक्ति की खोज में अपनी स्त्री का त्याग कर देता है तब महवीर और भगवान बुद्ध उसे भिक्षुणी होने का अधिकार देते है अब नारी पुरुषों की बाधा नहीं बल्कि शक्ति का स्रोत है। प्रेमचन्द ने कहा है कि जब पुरुष नारी का गुण लेता हैं, तब वह देवता बन जाता है और स्त्री जब पुरुष का गुण लेती है तब राक्षसी बन जाती है। अत: नर और नारी एक ही द्रव की ढली दो प्रतिमाएँ हैं। लेखक यहाँ तक कहते है की यदि कौरवों की सभा में संधि का वर्तालाप कृष्ण और दुर्योधन के बीच न होकर कुंती और गांधारी के बीच होता तो महाभारत का युद्ध रुक जाता।

2. उपर्युक्त पंक्तियों का भावार्थ अपने शब्दों में लिखें । [2012, 2013]

नारी तो हम हूँ करी, तब ना किया विचार ।
जब जानी तब परिहरी, नारी महाविकर ।

उत्तर: - प्रस्तुत पंक्ति अर्धनारीश्वर पाठ का है जो रामधारी सिंह दिनकर के द्वारा रचित है। इस पंक्ति में कबीरदास जी कहते हैं, हम भी बिना सोचे नारी से विवाह किये थे, तब वह दुख हरने वाली लगी थी। लेकिन अब हमें वह भारी बोझ और परेशानी जैसी लगने लगी है।

3. अर्धनारीश्वर शीर्षक निबंध पाठ में रवीन्द्रनाथ, प्रसाद और प्रेमचंद के चिंतन से दिनकर क्यों असंतुष्ट है? [2022]

उत्तर: - रामधारी सिंह दिनकर "रवीन्द्रनाथ, प्रसाद और प्रेमचंद के विचारों से इसलिए असंतुष्ट है क्योंकि अर्धनारीश्वर शिव और पार्वती का कल्पित रूप हैं, जिसका आधा अंग पुरुष का और आधा अंग स्त्री का है । जबकि रवीन्द्रनाथ कहते है- नारी की असली खूबी उसकी सुंदरता में है, तो वह शिक्षा लेकर क्या करेगी। प्रसाद जी कहते है- स्त्री को पुरुषों के कामों से दूर रखना चाहिए। और प्रेमचंद जी कहते हैं- पुरुष जब नारी के गुण लेता है तो वह देवता बन जाते हैं, पर स्त्री पुरुष का गुण लेती है, तब वह राक्षसी बन जाती है ।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. "प्रत्येक पत्नी अपने पति को बहुत कुछ उसी दृष्टि से देखती है जिस दृष्टि से लता अपने वृक्ष को देखती है।"

उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित "अर्धनारीश्वर" शीर्षक निबंध से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना है कि पत्नी अब पूर्ण रूप से अपने पति पर निर्भर करती है। कृषि काल में भी पुरुष अपनी पत्नी को फूलों सा आनंदमय भार समझता था। और अब प्रत्येक पत्नी भी अपने पति को बहुत कुछ उसी दृष्टि से देखती है जिस दृष्टि से लता अपने वृक्ष को देखती है ।

2. 'जिस पुरुष में नारीत्व नहीं, अपूर्ण है । [2012,13, 15,16,17,18, 23]

उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित "अर्धनारीश्वर" शीर्षक निबंध से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना है कि पुरुष पुरुषार्थ के लिए जाना जाता है तो स्त्री अपनी कोमल स्वभाव के लिए। परन्तु जिस पुरुष में नारी के गुण नहीं है, उसका जीवन अपूर्ण है। अत: पुरुष में नारी के गुण जरूर होना चाहिए।

3. "नर और मादा पशुओं में भी थे और पक्षियों में भी । किन्तु पशुओं और पक्षियों ने अपनी मादाओं पर आर्थिक परवशता नहीं लादी । लेकिन, मनुष्य की मादा पर यह पराधीनता आप से आप लद गई ।"

उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित "अर्धनारीश्वर" शीर्षक निबंध से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना है कि आज नारी पराधीनता के कारण अपना अस्तित्व खो रही है। और उसके सुख-दुख मान-प्रतिष्ठा, जीवन-मरण आदि सब कुछ पुरुष के मर्जी से होने लगा है।

4. "इसी प्रकार पुरुष भी स्त्रियोंचित गुणों को अपनाकर समाज में स्त्रैण कहलाने से घबराता है।" [2023]

उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित "अर्धनारीश्वर" शीर्षक निबंध से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना है कि जिस प्रकार आज स्त्री पुरुष के गुण सीखने से कतराती है, ठीक उसी प्रकार पुरुष भी स्त्रियोंचित गुणों को अपनाकर समाज में स्त्रैण कहलाने से घबराता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न:-

1. 'यदि संधि की वार्ता कुंती और गांधारी के बीच हुई होती, तो बहुत संभव था कि महाभारत न मचता' । [2019]

उत्तर - कुंती और गांधारी स्वभाव से कोमल थीं, लेकिन पुरुष प्रधान समाज में उनकी बात नहीं सुनी गई। यदि महाभारत से पहले संधि की बातचीत उन दोनों के बीच होती, तो शायद युद्ध रुक जाता, क्योंकि स्त्रियाँ दया करती हैं और रक्तपात नहीं चाहतीं है।

2. अर्धनारीश्वर की कल्पना क्यों की गई होगी? आज इसकी क्या सार्थकता है?

उत्तर: - अर्धनारीश्वर शिव और पार्वती का कल्पित रूप है। इसकी कल्पना शिव और शक्ति के बीच समन्वय दिखाने के लिए की गई होगी।

3. प्रवृतिमार्ग और निवृतिमार्ग क्या हैं?

उत्तर: - ये दोनों बौद्ध धर्म के मार्ग हैं प्रवृति मार्ग वाले भोग-विलास को जीवन का आधार बनाया। और निवृति मार्ग वाले नारियों की छाया से भी दूर भागते रहे।

4. बुद्ध ने आनंद से क्या कहा? [2020, 2024]

उत्तर- बुद्ध ने आनन्द से यह कहा की मेरा धर्म पाँच हजार वर्षों तक चलने वाला था परन्तु नारियों को भिक्षुणी बनाने के कारण अब केवल पाँच सौ वर्षों तक ही चलेगा।

5. नारी की पराधीनता कब से आरंभ हुई? [2013, 17, 18, 21, 22, 24]

उत्तर - नारी की पराधीनता कृषिकाल में आरंभ हुई। तभी से नारी घर में कैद हो गई। और पुरुष बाहर रहने लगा।

6. जिसे भी परुष अपना कर्मक्षेत्र मानता है, वह नारी का भी कर्मक्षेत्र है । कैसे? [2022]

उत्तर:- आज स्त्री और पुरुष दोनों हीं एक समान है। आज जो काम पुरुष करता है, वह स्त्री भी करती है । सभी क्षेत्रों में दोनों एकसाथ कदम से कदम मिलाकर चल रहे है।अत: दोनों का कर्म क्षेत्र एक है ।

7. नारी और नर एक ही द्रव्य की ढली दो प्रतिमाएँ है कैसे? [2021]

उत्तर - प्रकृति ने पुरुष और स्त्री में कोई भेदभाव नहीं किया है। दोनों हर काम में बराबर हैं। बस रुप में थोड़ा अंतर है, पर दोनों का शरीर एक ही तत्वों से बना है। अतः नर और एक ही द्रव्य की ढली दो प्रतिमाएँ है।

8. बनार्ड शॉ का नारी के संबंध में क्या विचार था?

उत्तर - बनार्ड शॉ ने नारी को अहेरिन माना है और नर को अहेर । नर को हमेशा नारियों से बच कर रहना चाहिए ।

9. बुद्ध को नारियों को बौद्धधर्म में प्रवेश की अनुमति क्यों देना पड़ा? [2024]

उत्तर - बुद्ध ने महिलाओं को बौद्ध धर्म में आने की अनुमति इसलिए दी क्योंकि वे चाहते थे कि महिलाएँ भी मोक्ष पा सकें। लेकिन इसका असर यह हुआ कि जो बौद्धधर्म पाँच हजार साल तक चलने वाला था, वह अब केवल पाँच सौ वर्षो तक ही चलेगा।

10. स्त्रियोचित गुण क्या है? [2015, 2016]

उत्तर: - स्त्रियोचित गुण का अर्थ है – स्त्री अपनी कोमल स्वभाव के लिए जानी जाती है वह पुरुषों के गुणों को सीखने से कतराती है, पर नर और नारी दोनों एक समान है ।

11. पुरुष के गुण क्या हैं? [2017]

उत्तर: - पुरुष पुरुषार्थ के लिए जाने जाते हैं। पुरुष भी स्त्रियोंचित गुणों को अपनाकर समाज में स्त्रैण कहलाने से घबराता है ।

12. पुरुष जब नारी के गुण लेता है तब वह क्या बन जाता है? [2013, 2012]

उत्तर: - प्रेमचंद जी कहते हैं जब पुरुष नारी के गुण लेता है तब देवता बन जाता है, पर स्त्री जब पुरुष के गुण लेती है तब वह राक्षसी बन जाती है

5. रोज

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न - 5 अंक

1. रोज पाठ का सारांश लिखें |

उत्तर- रोज शीर्षक कहानी अज्ञेय जी द्वारा रचित है। इस कहानी में एक मध्यम वर्गीय घरेलु नारी के जीवन की नीरसता, उदासी, घुटन, और पीड़ा का हृदयस्पर्शी चित्रण प्रस्तुत है। जो इस कहानी की नायिका और लेखक के दूर के रिश्ते की बहन लगती है, वह बचपन में बड़ी चंचल स्वभाव की थी।

उछलना, कूदना, हंसी, मजाक करना उसके जीवन का अभिन्न हिस्सा था। पढ़ाई के नाम पर किताबों के पन्ने फाड़ना, कच्ची अमिया तोड़ना आदि उसके दैनिक कार्य थे, परन्तु शादी होते ही काफी शांत और गंभीर हो गयी। उसकी शादी एक डॉक्टर से हुई थी, जो गैंग्रीन के मरीजों का इलाज किया करते थे| शादी के दो वर्ष के अन्दर ही मालती एक बच्चे की माँ बन गयी। बच्चा बड़ा चिड़चिड़ा स्वभाव का था। डॉक्टर पति (महेश्वर) के काम पर चले जाने के बाद सारा समय मालती को घर में एकाकी बिताना पड़ता था। वह रोज सुबह से रात ग्यारह बजे तक घर के कार्यों में मशीन की तरह खटती रहती थी। वह घुटन भरी उदासी जीवन जीने को मजबूर थी।

2. रोज शिर्षक कहानी के आधार पर मालती का चरित्र चित्रण करे। (2015,2016)

अथवा

रोज कहानी में कहानीकार ने किस प्रकार मालती के अंत: स्तिथि व बाह्य स्तिथि का वर्णन किया है?(2018)

उत्तर- मालती रोज शीर्षक कहानी की नायिका और लेखक के दूर के रिश्ते की बहन लगती है, जो बचपन में बहुत चंचल थी। उछलना, कूदना, हंसी, मजाक करना उसके जीवन का अभिन्न हिस्सा था। पढ़ाई के नाम पर किताबें फाड़ना, कच्ची अमिया तोड़ना आदि उसके दैनिक कार्य थे। मालती की शादी एक डॉक्टर से हुई थी, जो गैंग्रीन के मरीजों का इलाज करते-करते नीरस स्वभाव का बन गया था। जिससे मालती भी धीरे-धीरे पति के जैसी बन गई और उदासी भरा जीवन जीने लगी।

व्याख्यात्मक प्रश्न - 4 अंक

1. इस समय मैं यही सोच रहा था की वही उदत और चंचल मालती कितनी सीधी हो गई है ।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति अज्ञेय जी के द्वारा रचित रोज शीर्षक कहानी से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना है कि बचपन में जो मालती अत्यंत चंचल स्वभाव की थी वह विवाह के बाद सीधी और शांत हो गयी। उसका जीवन यंत्रवत नीरस के साथ गुजर रही है।

2. मझे लग रहा था कि इस घर पर जो छाया घिरी हुई है वह आज्ञात रहकर भी मानो मुझे भी वश में कर रही है ।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति अज्ञेय जी के द्वारा रचित रोज शीर्षक कहानी से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना है कि मालती के घर का वातावरण बिल्कुल सुना, उदास, निर्जीव और नीरस भरा था, जो धीरे-धीरे मुझे भी अपने वश में कर रही थी|

लघु उत्तरीय प्रश्न - 2 अंक

1. रोज कहानी की मालती ने किताब का क्या किया था ? (2019)

उत्तर- रोज कहानी में मालती को उसके पिताजी रोज बीस पन्ने पढ़ने के लिए किताब दिये थे, लेकिन मालती रोज उस किताब के दस से बीस पन्ने फाड़कर फेंक देती थी।

2. मालती के पति का परिचय दें । (2018,2022)

अथवा, महेशर के चरित्र का वर्णन करें।

उत्तर - मालती के पति महेश्वर एक डॉक्टर हैं, जो मरीजों के बीच रहते-रहते भावहीन हो गया हैं। उसे हंसने और रोने में कोई फर्क महसूस नहीं होता। उनका जीवन गैंग्रीन के मरीजों में बीत रहा है मरीजों का अंग काटना उनके लिए सामान्य बात है।

3. मालती के घर का वातावरण कैसा था ?

उत्तर- मालती के घर का वातावरण अत्यंत नीरस, सुना और उदासीभरा था। वह रोज घर में मशीन की तरह काम करती रहती थी। उसका पति महेश्वर गैंग्रीन के मरीजों का इलाज करते-करते संवेदन शून्य हो चूका था। बच्चा भी चिड़चिड़ा बन चुका था।

4. लेखक और मालती के संबंध का परिचय 'रोज' शीर्षक कहानी के आधार पर दें । (2024)

अथवा लेखक और मालती के बीच कैसा संबंध था ?

उत्तर- मालती लेखक के दूर के रिश्ते की बहन थी परन्तु उन दोनों में मित्रवत संबंध था। वे एक दुसरे से खुलकर बातें किया करते थे।

5. लेखक को मालती के आँगन में दोपहर में भी शाम की छाया जैसी उदासी क्यों दिखाई पड़ी?

उत्तर- मालती अपने क्वार्टर में अकेली रहती थी और उसका जीवन बहुत नीरस और उदासभरा था। इसी उदासी का असर उसके आँगन में भी दिखता था। इसलिए लेखक को दोपहर में भी उसके आँगन में शाम जैसी उदासी महसूस हुई।

6. गैंग्रीन क्या है?

उत्तर- गैंग्रीन एक जानलेवा बीमारी है, जो पहाड़ी क्षेत्रों में कांटो के चुभने से होता है। इस बीमारी के कारण कभी- कभी हाथ-पैर भी काटना पड़ता है।

7. "पहले तो रात-रात भर नींद नहीं आती थी" मालती के इस कथन का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर- इस कथन का तात्पर्य है- पहले मालती बहुत संवेदनशील थी। रोगियों की तकलीफ देखकर उसे बहुत दुख

होता था, जिससे उसे रात-रात भर नींद नहीं आती थी। पर अब वह भावनाहीन हो गई।

8. मालती ने सरकारी अस्पताल पर क्या व्यंग्य किया है?

उत्तर- मालती कहती है सरकारी अस्पतालों में मरीजों की ठीक से देखभाल नहीं होती है। वहाँ मरीजों से कोई सहानुभूति नहीं होती है। वे लोग जल्दी मरीज को रेफर कर देते हैं या हाथ-पैर काट देते हैं।

6. एक लेख और एक पत्र

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – 5 अंक

1. "एक लेख और एक पत्र" पाठ का सारांश लिखें |

उत्तर- प्रस्तुत "एक लेख और एक पत्र" शीर्षक पाठ भगत सिंह के द्वारा रचित है। इस पाठ में भगत सिंह कहते हैं कि विद्यार्थियों को पढ़ने के साथ-साथ राजनीति का भी ज्ञान होना चाहिए। किंतु पंजाब में पढ़ने वाले छात्रों को राजनीति से दूर रखा जाता है जिसे भगत सिंह गलत मानते हैं। उनका मानना हैं कि विदेशी शासन में देश को ऐसे नौजवानों की जरूरत है, जो देश के लिए बलिदान दे सकें। केवल पढ़ाई करके क्लर्क बन जाना शिक्षा का असली उद्देश्य नहीं है। विद्यार्थी अगर देश की समस्याएँ नहीं समझेंगे, तो भविष्य में देश का नेतृत्व कैसे करेंगे? सुखदेव को लिखे गए पत्र में भगत सिंह कहते हैं कि कष्ट सहना ही सच्चे क्रांतिकारी की पहचान है। जेल में मिलने वाली यातनाएँ उन्हें और मजबूत बनाती हैं। वे कहते हैं आत्महत्या कायरता है, और जो व्यक्ति देश के लिए लड़ रहा है, उसे कठिनाइयों से भागना नहीं चाहिए। वे रूसी साहित्य का भी उल्लेख करते हुए कहते हैं कि वहाँ के क्रांतिकारी बड़े कष्ट सहकर समाज में बदलाव लाए हैं, इसलिए हमें भी कष्ट सहकर देश की सेवा करनी चाहिए। अंत में वे कहते हैं- त्याग, संघर्ष और निरंतर प्रयास से कोई भी क्रांति जीती जा सकती है।

2. भगत सिंह ने कैसी मृत्यु को 'सुन्दर' कहा है? वे आत्महत्या को कायरता कहते है, इस संबंध में उनके विचारों को स्पष्ट करें। [2011]

उत्तर- देश के लिए संघर्ष करते हुए, देश की भक्ति करते हुए कुर्बानी देने को भगत सिंह ने सुंदर मृत्यु कहा है। अपने सिद्धान्त पर अडिग रहते हुए फांसी को गले लगाना सुन्दर मृत्यु है। दुख से डर कर लोग आत्महत्या कर लेते हैं। यह वास्तव में कायरता है। कुछ लोग दुखों से मुक्ति पाने के लिए आत्म हत्या कर अपने मूल्यों को मिटा लेते है।

3. भगत सिंह कौन थे? [2019]

उत्तर- भगत सिंह का जन्म 28 सितम्बर 1907 ई० में हुआ था। लाहोर षड्यंत्र केस में 23 मार्च 1931 ई. को भगत सिंह को अंग्रेजों ने फाँसी के फंदे पर लटका दिया। भारत राष्ट्र के लोकमानस में उनकी युवा छवि अमिट होकर बस गई। उन्होनें देश की स्वतंत्रा के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर लाखों सेनानियों की प्रेरणा बन गए। राष्ट्रीयता, देशभक्ति, क्रांति और युवाशक्ति के वे प्रेरणापुंज बन गए।

सप्रसंग व्याख्यात्मक – 4 अंक

1. जब देश के भाग्य का निर्माण हो रहा हो तो व्यक्तियो के भाग्य को पूर्णतया भुला देना चाहिए। [2013]

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति भगत सिंह द्वारा रचित "एक लेख और एक पत्र ' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना है कि जब देश को आजाद कराना है तब हमें 33 करोड़ लोगों के हित में सोचना चाहिए। एक आदमी को क्या कष्ट हो रहा है इसे भूल जाना चाहिए। इस विचार से हम सहमत है। आज भारत कुर्बानियों की बदौलत आजाद है।

2. हम तो केवल अपने समय की आवश्यकता की उपज है। [2020, 2022]

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति भगत सिंह द्वारा रचित "एक लेख और एक पत्र" शीर्षक पाठ से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना है कि मनुष्य अपने समय की आवश्यकता की उपज है। समय बलवान होता है। भारत गुलाम था इसे आजाद कराना होगा भारतीयों को जेल की सजा या मृत्यु दंड से डरना नही है। देश को आजाद कराना है।

3. मैं आपको बताना चाहता हूँ कि विपतियाँ व्यक्ति की पूर्ण बनाने वाली होती हैं।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति भगत सिंह द्वारा रचित "एक लेख और एक पत्र" शीर्षक पाठ से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना है कि विपतियाँ मनुष्य को पूर्ण रूप से मजबूत बना देती है। उस समय व्यक्ति का साहस, सहनशीलता सामर्थ्य, अपराजय शक्ति आदि का परीक्षा हो जाता है।

4. मनुष्य को अपने विश्वासों पर दृढ़तापूर्वक अडिग रहने का प्रयत्न करना चाहिए।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति भगत सिंह द्वारा रचित "एक लेख और एक पत्र" शीर्षक पाठ से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना है कि जेल की यातनाएँ मनुष्य के विचारों में

परिवर्तन ला देती है। उस समय व्यक्ति धैर्य खो देता है। अतः मनुष्य को अपने विश्वासों पर दृढ़ता होनी चाहिए, उसे अपने विचारो पर अडिग होना चाहिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न – 2 अंक

1. भगत सिंह ने अपनी फाँसी के लिए किस समय की इच्छा व्यक्त की है?

उत्तर- भगत सिंह सभी भारतीयों के हृदय में अमिट छाप छोड़ने के लिए फाँसी की सजा चुनते है और वे चाहते हैं मुझे फाँसी उस समय दी जाए जब आंदोलन अपनी चरम सीमा और विश्व स्तर पर हो|

2. भगत सिंह की विद्यार्थियो से क्या अपेक्षाएँ है ?[2013, 2021, 2025]

उत्तर- भगत सिंह की विद्यार्थियों से निम्न अपेक्षाएँ हैं- (i) विद्यार्थी पढ़ने के साथ-साथ पॉलिटिक्स का भी ज्ञान रखें।
(ii) जरूरत पड़ने पर मैदान में कुद पड़ें ।
(iii) अपने देश के अस्तित्व की रक्षा करें ।
(iv) देश को आजाद करवाने में पूरे सहयोग करे।

3. विद्यार्थियों को राजनीति में भाग क्यों नहीं लेना चाहिए?

उत्तर- विद्यार्थियों को राजनीति में भाग इसलिए नहीं लेना चाहिए क्योंकि इससे छात्रों की एकाग्रता भंग हो जाती है। उसका मन पढ़ाई से उतरकर राजनीति की तरफ आकर्षित होने लगता है।

4. विद्यार्थियों को राजनीति में भाग क्यों लेना चाहिए?

उत्तर- विद्यार्थियों को राजनीति में भाग लेना चाहिए क्योंकि इससे उन्हें देश में क्या हो रहा है, इसकी जानकारी मिलती है। इससे उनके सोचने की क्षमता बढ़ती है और वे जिम्मेदार नागरिक बनते हैं। पढ़ाई के साथ-साथ देश के बारे में जानना भी जरूरी है ताकि वे भविष्य में देश के काम आ सकें।

5. भगत सिंह रूसी साहित्य को इतना महत्वपूर्ण क्यों मानते थे?

उत्तर- भगत सिंह रूसी साहित्य को इसलिए महत्वपूर्ण मानते है, क्योंकि इसमें क्रांति और स्वतंत्रता की भावना बहुत मजबूत थी। यह लोगों को अन्याय के खिलाफ खड़े होने और देश के लिए बलिदान देने की प्रेरणा देता है।

6. भगत सिंह के अनुसार केवल भगत सिंह के जीवन से कष्ट सहकर ही देश की सेवा की जा सकती है? स्पष्ट करें -

उत्तर- भगत सिंह मानते थे कि देश की सेवा करने के लिए कष्ट सहना जरूरी है। उनके जीवन में बहुत कष्ट आए, पर कभी हार नहीं माने। बल्कि स्वतंत्रता के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिये। इसलिए वे कहते हैं देश की सेवा कष्ट सहकर ही की जा सकती है।

7. ओ सदानीरा

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. ओ सदानीरा पाठ का सारांश लिखें | [2020, 2022, 2023, 2024]

उत्तर:- "ओ सदानीरा" निबंध जगदीशचन्द्र माथुर के द्वारा रचित है। चंपारण की धरती पर बहने वाली गंडक नदी को लोग प्यार से सदानीरा कहते हैं, क्योंकि इसमें हमेशा पानी रहता है। यह नदी कभी शांत बहती है, तो कभी तेज होकर उफनने लगती है। लेखक को यह नदी ऐसी लगती है जैसे चंपारण के लोगों का जीवन कभी सरल तो कभी कठिन। इस नदी के किनारे बसा गाँव बहुत सुंदर हैं। यहाँ के लोग सीधे-सादे और मेहनती हैं। धांगड़ और थारू समुदाय के लोग यहाँ रहते हैं, जो नाचते-गाते और अपनी परंपराएँ निभाते हैं। लेकिन एक समय ऐसा भी था जब अंग्रेजों ने किसानों पर अत्याचार करके उनसे जबरदस्ती नील की खेती करवाते थे। इसी समय गांधीजी चंपारण आए थे। और उन्होंने किसानों की परेशानी को समझे और उनकी मदद किये। साथ ही, उन्होंने भितरवा और मधुबनी में स्कूल भी खुलवाएं ताकि गाँव के बच्चे पढ़-लिख सकें और अपना अधिकार जान सकें। लेखक इस निबंध में बताते हैं कि सदानीरा नदी केवल पानी की धारा नहीं है, बल्कि चंपारण के इतिहास, संस्कृति, संघर्ष और उम्मीदों की गवाह है। यह हमें यह सिखाती है कि प्रकृति, इतिहास और मनुष्य आपस में जुड़े हैं। और हमें सदा इसकी रक्षा करना चाहिए।

2. गाँधीजी ने झोपड़ी कहाँ बनायी थी? (2019)

उत्तर- गाँव में गाँधी जी को आश्रय देने की किसी की हिम्मत नहीं थी, इसलिए मठ के महंत ने उन्हें महुएँ के पेड़ के नीचे रहने की जगह दी। गांधीजी ने वहाँ खटिया बिछाकर रहना शुरू किये और बाद में एक छोटी झोपड़ी बना ली। उस झोपड़ी में डॉ. देव रहते थे और वहीं से आश्रम का काम चलाते थे। बाद में एमन साहब के लोगों ने झोपड़ी को जला दिया। फिर वहाँ खपरा का एक घर बना, जहां कस्तूरबा गांधी भी रहती थीं और आश्रम के लोगों की देखभाल करती थीं। गांधीजी ज़्यादातर बेतिया और मोतिहारी में रहते थे।

3. गाँधीजी के चंपारण आंदोलन की किन दो सीखों का उल्लेख लेखक ने किया है? इन सीखों को आज आप कितना उपयोगी मानते हैं? उन्हें लिखें। (2022A)

उत्तर- लेखक ने गाँधीजी के चंपारण आंदोलन से दो मुख्य सीखों का उल्लेख किया है-

(i) निर्भीकता (निडर होना) - गाँधीजी कहते हैं अन्याय के सामने डरना नहीं चाहिए। जो व्यक्ति निडर होता है, वह अन्याय का सामना कर्ता है।

(ii) सत्याचरण (सच्चाई पर चलना) - गाँधीजी कहते है हमेशा सत्य की राहों पर चलना चाहिए। वे हर बात की जाँच-पड़ताल करके ही कुछ कहते या लिखते थे।

ये दोनों सीखें आज बहुत उपयोगी हैं।

4. चंपारण में शिक्षा की व्यवस्था के लिए गांधीजी ने क्या किया? (2020)

उत्तर- गाँधीजी चंपारण किसानों की समस्या सुलझाने आए थे। उन्होंने कहा कि केवल आर्थिक समस्या हल करने से काम नहीं चलेगा बच्चों की शिक्षा भी जरूरी है। इसलिए गाँधीजी ने तीन गाँवों में विद्यालय खोले –

(i) बड़हरवा – यह स्कूल बवनजी गोखले और उनकी पत्नी चलाते थे।

(ii) मधुबन – यहाँ नरहरिदास पारिख, उनकी पत्नी और महादेव देसाई पढ़ाते थे। कुछ समय पुंडलीक जी भी यहाँ रहे।

(iii) भितिहरवा – यहाँ आश्रम में कस्तूरबा गांधी रहती थीं और सभी कार्यकर्ताओं की देखभाल करती थीं।

5. चंपारण क्षेत्र में बाढ आने का प्रमुख कारण क्या है? (2019)

उत्तर- चंपारण की जमीन पहले पेड़ों और जंगलों से ढकी थी। धीरे-धीरे पेड़ों को काट दिया गया – खेती और अन्य जरूरतों के लिए। पहले जब जंगल थे, तब वृक्षों की जड़ों में पानी रुक जाता था और भयंकर बाढ़ नहीं आती थी। परंतु पेड़ कटने और मजदूरों के बसने के बाद नदियाँ उफान मारती है और चारों ओर पानी ही पानी हो जाता है।

6. 'ओ सदानीरा' पाठ में आए नौका विहार प्रसंग का वर्णन करें। (2012, 2013)

उत्तर- 'ओ सदानीरा' पाठ में नौका-विहार का दृश्य बहुत सुंदर है। लेखक गंडक नदी में मोटरबोट पर बैठे थे। भारतीय इंजीनियर उन्हें बराज और नहर बनाने का काम समझा रहे थे। वे जंगल के बीच बिजली के तार और नहरों का बड़ा निर्माण कर रहे थे। लेखक को लगा कि यह काम जनता की गरीबी और दुख दूर करने वाला है। उन्हें यह निर्माण नारायण के विशाल रूप जैसा भी लगा।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. "कैसी चम्पारण की यह भूमि ? मानो विस्मृति के हाथों अपनी बड़ी से बड़ी निधियों को सौंपने के लिए प्रस्तुत रहती है।"(2021)

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति जगदीशचन्द्र माथुर द्वारा रचित "ओ सदानीरा" निबंध से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना है कि चंपारण की भूमि पहले बहुत खास और उदार थी। लेकिन अब वहाँ बचे हैं सिर्फ कटे पेड़, बाढ़ लाती नदियाँ और अशिक्षा। यानी यह भूमि पहले बहुत महत्त्वपूर्ण थी, लेकिन अब उसका महत्व कम हो गया है।

2. "वसुंधरा भोगी मानव और धर्मांध मानव-एक ही सिक्के के दो पहलू है।" (2020)

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति जगदीशचन्द्र माथुर द्वारा रचित "ओ सदानीरा" निबंध से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना है कि इंसान दो तरह के है पहला वसुंधरा भोगी मानव - जो धरती और उसके संसाधनों का केवल स्वार्थ के लिए उपयोग करता है। दूसरा धर्मांध मानव - जो धर्म और अंध-विश्वास में फँसकर सही और गलत नहीं समझता।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. चौर और मन किसे कहते हैं? (2014)

उत्तर- उथले ताल को चौर और गहरे-बड़े ताल को मन कहते हैं।

2. पुंडलीक जी कौन थे? (2012, 2017)

उत्तर- पुंडलीक जी गांधीजी के सहयोगी थे, जो बच्चों को पढ़ाते और ग्रामवासियों का भय दूर करते थे।

3. 'ओ-सदानीरा' किस नदी के लिए कहा गया है? (2019)

उत्तर- ओ सदानीरा गंडक नदी को कहा गया है।

4. लेखक के अनुसार सुरक्षा कहाँ है? (2020)

उत्तर- सुरक्षा डायरी में नहीं होती है। सुरक्षा चुनौतियों का सामना करने में है, छिपने या भागने में नहीं।

5. इतिहास में क्रीमियाई प्रक्रिया का आशय क्या है? (2020)

उत्तर- इतिहास में क्रीमियाई प्रक्रिया का अर्थ है कि जब कोई समुदाय या लोग अपनी पुरानी जगह छोड़कर किसी नई जगह जाकर बस जाते हैं और वहाँ की संस्कृति में घुल- मिल जाते हैं, तो इसे ही क्रीमियाई प्रक्रिया कहा जाता है।

6. 'धांगड़' शब्द का क्या अर्थ है? (2017, 2019, 2021)

उत्तर- 'धाँगड़' शब्द का अर्थ है – भाड़े का मजदूर। जो गुलामी का जीवन जीते थे।

7. अंग्रेज नीलहे किसानों पर क्या अत्याचार करते थे? (2025)

उत्तर- अंग्रेज नीलहे गोरे किसानों पर बहुत अत्याचार करते थे। चम्पारण में उनका पूरा साम्राज्य था। साहब की सड़कों पर किसान अपने जानवर नहीं ले जा सकते थे। त्योहारों पर साहब (अंग्रेज) को उपहार भेजना पड़ता था।

8. गंगा पर पुल बनाने में अंग्रेजों ने क्यों दिलचस्पी नहीं ली? (2016)

उत्तर- क्योंकि चंपारण में अंग्रेज नीलहे गोरे किसानों पर शोषण और अत्याचार करते थे। दक्षिण बिहार में बगावत जल्दी पहुँची, लेकिन चंपारण तक देर से पहुँची। इसलिए अंग्रेज सरकार ने गंगा पर पुल बनाने में कोई दिलचस्पी नहीं ली।

9. गांधीजी के शिक्षा संबंधी आदर्श क्या थे? (2012, 2013)

उत्तर- गांधि जी के शिक्षा संबंधी निम्न आदर्श थे-

(i) गांधीजी चाहते थे कि शिक्षा से केवल अक्षर ज्ञान न मिले, बल्कि चरित्र और बुद्धि का विकास हो।

(ii) बच्चे सुसंस्कृत और सच्चरित्र बनें।

(iii) शिक्षा का उपयोग जीवन और आजीविका में हो।

(iv) स्कूल की पढ़ाई गाँव के जीवन और खेती-बाड़ी से जुड़ी हो।

8. सिपाही की माँ

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. सिपाही की माँ पाठ का सारांश लिखें |

उत्तर- 'सिपाही की माँ' मोहन राकेश द्वारा रचित एक भावुक एकांकी है। इसमें बिशनी नाम की एक गरीब माँ और उसकी बेटी मुन्नी का जीवन दिखाया गया है। बिशनी का इकलौता बेटा मानक द्वितीय विश्व युद्ध में बर्मा गया हुआ है। बिशनी रोज उसके पत्र का इंतज़ार करती है और उसके सुरक्षित लौटने की दुआ करती है। बिशनी को अपने बेटे की बहुत चिंता रहती है। वह कई बार सपनों में उसे घर आते देखती है, लेकिन जागने पर दुखी हो जाती है। वह अपनी बेटी मुन्नी को झूठी तसल्ली देती है ताकि वह डर न जाए। यह एकांकी युद्ध की भयानकता, माँ के दर्द और उसके सच्चे प्रेम को दर्शाता है। यह एकांकी केवल एक माँ की कहानी नहीं है, बल्कि उन सभी माताओं की पीड़ा को दिखाता है जिनके बेटे युद्ध में गए हैं। अंत में बिशनी बेटे की सलामती की प्रार्थना करती है, जो माँ की आशा और ममता को प्रकट करता है।

2. 'सिपाही की माँ' की संवाद-योजना की विशेषताएँ बताएँ। (2020)

उत्तर - इस एकांकी के संवाद बहुत सरल और स्वाभाविक हैं। पात्र अपने भाव छोटे-छोटे और साफ शब्दों में कहते हैं। इन्हीं संवादों से कहानी आगे बढ़ती है और नाटक रोचक बनता है। माँ और बेटी की बातचीत में सच्चाई, करुणा और भावुकता है। यही इसकी संवाद-योजना को असरदार और सफल बनाती है।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. घर-वर देखकर ही क्या करना है कुंती। मानक आए तो कुछ हो भी। तुझे पता ही है, आजकल लोगों के हाथ कितने बढ़े हुए हैं? (2012, 2022)

उत्तर - प्रस्तुत पंक्तियाँ मोहन राकेश द्वारा रचित एकांकी "सिपाही की माँ" से ली गई हैं। इस पंक्ति में बिशनी कुंती से कहती है कि घर-वर देखकर क्या करना है, मानक युद्ध से लौटेगा तभी बेटी की शादी हो पायेगी। आजकल शादी में बहुत खर्चा होता है, इसलिए सबकी आशा मानक पर टिकी है।

2. यह भी हमारी तरह गरीब आदमी है।

उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति मोहन राकेश द्वारा रचित एकांकी "सिपाही की माँ" से ली गई है। इस पंक्ति में माँ अपने बेटे को समझाती है कि दुश्मन सिपाही भी हमारी तरह गरीब है। उसके भी परिवार और बच्चे होंगे। उसे छोड़ दो।

3. नहीं, फौजी वहाँ लड़ने के लिए हैं, वे नहीं भाग सकते। जो फौज छोड़कर भागता है, उसे गोली मार दी जाती है।

उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति मोहन राकेश रचित "सिपाही की माँ" पाठ से ली गई है। इस पंक्ति में रंगून शहर से आयी लड़की कहती है कि फौजी भाग नहीं सकते हैं। वे लड़ने के लिए ही भेजे जाते हैं। अगर कोई भागे तो उसे गोली मार दी जाती है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बिशनी कौन है? इसको किसकी प्रतीक्षा है? (2018)

उत्तर- बिशनी सिपाही की माँ नाटक की मुख्य पात्र है। वह अपने बेटे मानक की प्रतीक्षा करती है, जो युद्ध में गया है।

2. एकांकी और नाटक में क्या अंतर है ? (**2020,2022**)

उत्तर- एकांकी : यह केवल एक अंक का छोटा नाटक होता है। इसका मंचन बहुत आसान है।

नाटक : यह कई अंकों का बहुत बड़ा नाटक होता है इसका मंचन बहुत कठिन होता है।

3. मानक और सिपाही एक-दूसरे को क्यों मारना चाहते हैं? (2016,2021,2022)

उत्तर - मानक और सिपाही युद्ध में दुश्मन सेनाओं के सिपाही हैं। मानक ने हजारों दुश्मनों के साथ उस सिपाही को भी मारा है। इसलिए दोनों एक-दूसरे को मारना चाहते हैं।

4. कुंती का परिचय दें। (2021,2024)

उत्तर - कुंती बिशनी की पड़ोसिन है। वह बिशनी से उसके बेटे की चिट्ठी और मुन्नी की शादी की बातें करती है।

5. बिशनी मानक को लड़ाई में क्यों भेजती है? (2025)

उत्तर- मुन्नी की शादी के लिए पैसे की बहुत जरुरत थी, इसलिए बिशनी अपने बेटे मानक को युद्ध में भेजती है।

6. मानक स्वयं को वहशी और जानवर से भी बढ़कर क्यों कहता है? (2020)

उत्तर- मानक युद्ध में दुश्मनों को मारता है और कहता है कि अगर मैं दुश्मनों को नहीं मारूँगा तो वह मुझे मार देगा। इसी कारण से वह खुद को वहशी और जानवर से भी बढ़कर कहता है।

7. बिशनी और मुन्नी को किसकी प्रतीक्षा है? वे डाकिये की राह क्यों देखती हैं? (2020)

उत्तर- बिशनी और मुन्नी को मानक की प्रतीक्षा हैं। मानक युद्ध में गया है। वे डाकिये की राह इसलिए देखती हैं ताकि मानक का पत्र मिल सके। और उसकी खबर पता चले।

8. बिशनी मानक की माँ है पर उसमें किसी भी सिपाही की माँ को ढूँढ़ा जा सकता है, कैसे?

उत्तर- बिशनी अपने बेटे मानक को बचाने के साथ-साथ दुश्मन सिपाही को भी बचाना चाहती है। वह कहती है कि उसकी भी माँ होगी जो। रो-रो कर पागल हो जाएगी। बिशनी की यही सोच हर सिपाही की माँ जैसी है।

9. आपके विचार से सिपाही की मां "एकांकी" का सबसे सशक्त पात्र कौन है। और क्यों?

उत्तर - सिपाही की मां "एकांकी" का सबसे सशक्त पात्र बिशनी है, क्योंकि वह एक सच्ची मॉ की तरह दयालु और साहसी है। वह अपने बेटे को भी बचाती है और दुश्मन सिपाही को भी मारने नहीं देती। यह उदार सोच उसे सबसे प्रभावशाली पात्र बनाती है।

10. दोनों लड़कियाँ कौन हैं?

उत्तर- दोनों लड़कियाँ बर्मा के रंगून शहर से आई हुई शरणार्थी हैं। उनका घर जापानी बमबारी में उजड़ गया, परिवार के लोग मारे गए और वे भूखी-प्यासी भारत आईं हैं।

11. सिपाही के घर की स्थिति मानक के घर से भिन्न नहीं है। कैसे?

उत्तर- मानक और सिपाही दोनों ही अपने परिवार का सहारा हैं। मानक पर माँ और बहन की जिम्मेदारी है। जबकि सिपाही पर माँ और पत्नी की। दोनों गरीब हैं अतः उनकी स्थिति एक जैसी है।

9. प्रगीत और समाज

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. "प्रगीत और समाज" पाठ का सारांश लिखें |

उत्तर- "प्रगीत और समाज" नामवर सिंह के द्वारा रचित एक आलोचनात्मक निबंध है, जो 'वाद-विवाद और संवाद' पुस्तक से लिया गया है। प्रगीत और समाज एक ऐसा निबंध है जो भावनाओं से भरी होती है और कम शब्दों में गहराई से भावों को व्यक्त करती है। यह जीवन के यथार्थ को अच्छे ढंग से दर्शाती है। ये निबंध केवल अच्छाई-बुराई ही नहीं बताती, बल्कि इतिहास और परंपरा को पहचानना भी सिखाती है। तथा यह वर्तमान को गहराई से समझने में भी मदद करती है। यह हमें सोचने और समझने की एक नई दृष्टि भी देती है।

2. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के काव्य-आदर्श क्या थे, 'प्रगीत और समाज' शीर्षक पाठ के आधार पर स्पष्ट करें। [2025]

उत्तर - आचार्य रामचंद्र शुक्ल के काव्य-आदर्श प्रबंधकाव्य थे। क्योंकि प्रबंधकाव्य में केवल भाव या सौंदर्य नहीं होता है, बल्कि समाज और जीवन का संपूर्ण चित्र होता है। अच्छी कविता वही होती है जो मानव जीवन के सुख-दुख, संघर्ष और सच्चाई को अच्छे दिखाता है। वे चाहते थे कि कविता से समाज को कुछ सीखने को मिले।

3."कला कला के लिए" सिद्धान्त क्या है? [2019, 2021, 2023]

उत्तर - 'कला कला के लिए' का मतलब है कि कला स्वतंत्र होती है, उसे किसी समाज के उद्देश्य या लाभ के लिए नहीं बनाया जाता है। जब कोई कलाकार अपने मन की भावना को सुंदर ढंग से प्रस्तुत करता है, तो वह कला कहलाता है। हर कलाकार की सोच और अनुभव अलग होते हैं। अतः कला को देखते समय यह देखना ज़रूरी है कि कलाकार ने अपनी भावना को कितनी अच्छी तरह दिखाया है।

4. नामवर सिंह रचित 'प्रगीत और समाज' निबंध की विवेचना करें। [2014]

उत्तर- यह निबंध 'वाद विवाद संवाद' पुस्तक से लिया गया है। नामवर सिंह हिंदी आलोचना के एक प्रसिद्ध विद्वान थे। प्रगीत और समाज एक ऐसा निबंध है जो भावनाओं से भरी है और कम शब्दों में गहराई से भावों को व्यक्त करती है। यह जीवन के यथार्थ को दर्शाती है। ये निबंध केवल अच्छाई-बुराई ही नहीं बताती, बल्कि यह इतिहास और परंपरा को पहचानना सिखाती है। तथा वर्तमान को गहराई से समझने में मदद करती है। यह हमें सोचने और समझने की एक नई दृष्टि भी देती है।

4. वस्तुपरक नाट्यधर्मी कविताओं से क्या तात्पर्य है?

अथवा

आत्मपरक प्रगीत और नाट्यधर्मी कविताओं की यथार्थ-व्यंजना में क्या अंतर है?

उत्तर - वस्तुपरक नाट्यधर्मी कविताएं एक ऐसी कविता हैं जिसमें बाहरी जीवन के चित्र दिखाए जाते हैं।

आत्मपरक प्रगीत - यह एक छोटी कविता हैं, जो कवि के भीतर की अनुभूति को दिखाती है।

नाट्यधर्मी कविताएं - यह भी एक छोटी कविता है, जो कवि के बाहरी अनुभूति को दिखाती हैं।

5. हिन्दी कविता के इतिहास में प्रगीतों का क्या स्थान है? सोदाहरण स्पष्ट करें।

उत्तर - हिन्दी कविता के इतिहास में प्रगीतों का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रगीत वे कविताएं है, जो भावनाओं और आत्म अनुभूति पर आधारित होती हैं। विद्यापति, सूरदास, तुलसीदास के काव्य में भी प्रगीत के तत्व मिलते हैं। इसके बाद मुक्तिबोध, नागार्जुन और शमशेर बहादुर सिंह ने भी प्रगीत को नया रूप दिया, जिसमें आधुनिक भावनाएँ और शैली शामिल हैं।

6. मुक्तिबोध की कविताओं पर पुनर्विचार की आवश्यकता क्यों है? आलोचक के डस विषय में क्या निष्कर्ष हैं?

उत्तर - मुक्तिबोध की कविताओं पर पुनर्विचार इसलिए जरूरी है क्योंकि, उनकी कविताएँ अधिकतर आत्मपरक होती हैं। तथा उनके कविता में छुपे हुए सामाजिक अर्थ को पूरी तरह समझा नहीं गया है।

आलोचकों का मानना है कि उनकी छोटी कविताएँ भी प्रगतिशील और सामाजिक सोच से जुड़ी हैं। अतः फिर से मूल्यांकन करना जरूरी है।

7. त्रिलोचन और नागार्जुन के प्रगीतों की क्या विशेषताएँ हैं? पाठ के आधार पर उत्तर दें।

उत्तर - त्रिलोचन की कविता में प्रकृति, गांव और आम जीवन के रंग-बिरंगे चित्र मिलते हैं। उनकी कविता में सामान्य लोगों भावनाएं होती हैं।

नागार्जुन की कविता में अक्सर तेज और समाज पर चोट करने वाली शैली होती है। पर जब वे आत्मपरक प्रगीत लिखते हैं, तो उनमें सामान्य लोगों की गहरी भावनाएँ होती है।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. "कविता जो कुछ कह रही है उसे सिर्फ वही समझ सकता है जो इसके एकाकीपन में, मानवता की आवाज सुन सकता है।" [2022]

उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति नामवर सिंह द्वारा रचित निबंध 'प्रगीत और समाज' से लिया गया हैं। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना है कि कविता चाहे व्यक्तिगत हो या सामाजिक, वह दिल की बाते होती है। इसे समझने के लिए संवेदनशील और मानवीय दृष्टि होना बहुत जरुरी है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. नामवर सिंह किन कविताओं को श्रेष्ठ मानते हैं? [2018]

उत्तर- नामवर सिंह उन कविताओं को श्रेष्ठ मानते हैं जो समाज की चिंता करती हैं और जनमानस को बदलने की शक्ति रखती हैं।

2. प्रगीतात्मकता का अर्थ आलोचकों की दृष्टि में क्या है? [2016]

उत्तर - आलोचकों के दृष्टि में प्रगीतात्मकता का अर्थ ऐसी कविता से है जिसमें व्यक्ति के सुख-दुख को गहरे भाव से, कम शब्दों में और संगीत की तरह व्यक्त किया गया हो।

3. प्रगीत क्या है? [2017]

उत्तर - प्रगीत वह कविता है जो भावनाओं से भरी होती है और कम शब्दों में गहराई से भाव व्यक्त करती है। यह आत्मपरक होती है और जीवन के यथार्थ को दर्शाती है।

4. हिन्दी की आधुनिक कविता की क्या विशेषताएँ आलोचक ने बतायी हैं?

उत्तर- आधुनिक कविता में कवि का आत्म संघर्ष और सामाजिक सच्चाई दोनों दिखते हैं। यह कविता समाज की हकीकत को साफ-साफ दिखाता है।

10. जूठन

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'जूठन' आत्मकथा का सारांश लिखें।

उत्तर: - 'जूठन' ओम प्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा है, जिसमें लेखक अपने जीवन की सच्चाई और दुख भरे अनुभव बताए हैं। उनका परिवार बहुत गरीब था और छोटी जाति का होने के कारण उन्हें अपमान झेलना पड़ता था। उनकी माँ मेहनत-मजदूरी करती थी और कभी-कभी दूसरों की जूठन खाकर परिवार का पेट भरती थी। समाज उन्हें नीचा समझता था। लेखक ने इस आत्मकथा में दिखाया है कि कैसे दलित लोग मेहनत करते हुए भी सम्मान से वंचित रहते हैं। अब लेखक पढ़-लिखकर आगे बढ़ गये है और वे चाहता है कि दलित लोग भी शिक्षा पाकर अपने जीवन में सुधार करें और बराबरी का हक पाएँ।

2. विद्यालय में लेखक के साथ कैसी घटनाएँ घटती हैं? 'जूठन' शीर्षक आत्मकथा के आधार पर लिखें।

उत्तर - विद्यालय में लेखक को छोटी जाति का होने के कारण प्रतिदिन अपमान सहना पड़ता था। उसे मैदान और बरामदे में रोज झाड़ू लगाना पड़ता था। हेडमास्टर की डाँट सहनी पड़ती थी। जिस कारण लेखक की आँखों से आँसू बहने लगते थे। उसे रोज विद्यालय में बहुत अपमान और दुख सहना पड़ता था।

3. लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि समाज में क्या बदलाव लाना चाहते हैं?

उत्तर- लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि समाज में बराबरी का अधिकार लाना चाहते थे। वे चाहते हैं कि ऊँच-नीच और जाति भेद खत्म हो जाए। हर व्यक्ति को समान अवसर मिले। दलित लोग कितने दुख, अपमान और अन्याय झेलते हैं।

4. पिता जी ने स्कूल में क्या देखा? उन्होंने आगे क्या किया? पूरा विवरण अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर - लेखक स्कूल में झाड़ू लगा रहे थे। तभी उसके पिता जी वहाँ से गुजर रहे थे। उन्होंने अपने बेटे को झाड़ू लगाते देखा तो रुक गए और पूछा – "ये क्या कर रहे हो, लेखक अपने पिता को देखकर रोने लगे। पिता जी स्कूल के मैदान में आए और प्यार से पूछा – "क्यों रो रहे हो? क्या हुआ?" तब लेखक ने रोते-रोते सब बता दिया कि "तीन दिन से झाड़ू लगवा रहे हैं, पढ़ने नहीं देते।"

यह सुनकर उसके पिता जी बहुत गुस्सा हो गए। उन्होंने झाड़ू छीनकर फेंक दी और जोर से बोले – "कौन मास्टर है जो मेरे बेटे से झाड़ू लगवाता है?" उनकी आवाज सुनकर सारे मास्टर बाहर आ गए। हेडमास्टर कलीराम ने गुस्से में लेखक के पिता को धमकाया, लेकिन पिता जी नहीं डरे। उन्होंने हिम्मत और गुस्से से सबका सामना किया। लेखक उस दिन अपने पिता का साहस देखकर कभी नहीं भूल पाया।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. कितने क्रूर समाज में रह रहे हैं हम, जहाँ श्रम का कोई मोल नहीं ताकि निर्धनता को बकरार रखने का षड्यन्त्र ही था यह सब।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' से ली गई हैं। लेखक कहते हैं कि हमारा समाज बहुत क्रूर है, जहाँ मेहनत करने वालों को सम्मान नहीं मिलता। दलित लोग कठिन काम करते हैं, लेकिन उन्हें बहुत कम पैसे और बहुत गालियाँ मिलती हैं। समाज ने गरीबों को गरीब बनाए रखने की व्यवस्था बना रखी है। लेखक चाहते हैं कि इस अन्यायपूर्ण व्यवस्था को बदला जाए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. क्या 'जूठन' शीर्षक सार्थक है? [2019]

उत्तर- 'जूठन' ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा है। लेखक को बचपन में दूसरों की जूठन खाकर पेट भरना पड़ता था। यह पाठ उनके जीवन की सच्चाई और जातिगत उत्पीड़न को दिखाता है। यही कारण है कि 'जूठन' शीर्षक बहुत सार्थक है।

2. घर पहुँचने पर लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि को देख उनकी माँ क्यों रो पड़ती हैं?[2023]

उत्तर- लेखक को अपने चाचा के साथ एक मरे हुए बैल की खाल उतारने के लिए भेजा गया था। किन्तु घर लौटते समय लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि गंदगी और खून से लथपथ थे इसलिए माँ उसे देखकर दुखी होकर रो पड़ीं।

3. हेडमास्टर कलीराम ने बालक ओमप्रकाश को क्या आदेश दिया था? [2024]

उत्तर- हेडमास्टर कलीराम ने ओमप्रकाश को स्कूल के कमरे और मैदान की सफाई करने का आदेश दिया था, क्योंकि वह अछूत जाति का लड़का था।

4. किन बातों को सोचकर लेखक के भीतर काँटे से उगने लगते हैं?

उत्तर - लेखक को अपने बचपन की गरीबी याद आती है कि किस तरह उसका परिवार सफाई का काम करता था, उन

मेहनत के बदले जूठा खाना खाना पड़ता था। इन बातों को सोचकर लेखक के भीतर काँटे से उगने लगते हैं।

6. सुरेन्द्र की बातों को सुनकर लेखक विचलित क्यों हो जाता है?

उत्तर - लेखक सुरेन्द्र की बातों को सुनकर इसलिए विचलित हो जाता है क्योंकि सुरेन्द्र के परिवार की जूठन पर ही उसका बचपन बीता था। जब सुरेन्द्र ने उसके घर के खाने की तारीफ की, तो लेखक को वही पुरानी अपमानजनक पल याद आ जाती है।

7. लेखक की भाभी क्या कहती हैं? उनके कथन का महत्व बताइए।

उत्तर - लेखक की भाभी कहती थी – "इनसे यह काम मत कराओ, भूखे रह लेंगे, पर इन्हें इस गंदगी में मत घसीटो।" भाभी नहीं चाहती थी वे पढ़-लिखकर अच्छा आदमी बने।

11. हँसते हुए मेरा अकेलापन

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'हँसते हुए मेरा अकेलापन' पाठ का सारांश लिखें | [2021, 2024]

उत्तर- 'हँसते हुए मेरा अकेलापन' मलयज द्वारा रचित डायरी है, जिसमें उनके जीवन के विचार, संघर्ष और गहरे अकेलेपन का वर्णन है। उनके लिए डायरी लिखना सिर्फ लिखना नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक तरीका है। जहाँ वे बिना डरे अपने मन की सच्ची बातों को आसानी से लिख सकते हैं। डायरी उनके लिए एक सुरक्षा कवच की तरह है, जहां वे अपने मन की बातों को सुरक्षित रख पाते हैं, जिससे उन्हें अकेलेपन में भी शांति और ऊर्जा मिलती है। वे कहते हैं डायरी लिखने से इंसान ईमानदार और आत्म-विश्लेषी बन जाता है। इसलिए जीवन की सुरक्षा समस्याओं से डरकर भागने में नहीं, बल्कि संघर्ष करने और डायरी लिखने में है। अतः डायरी लेखक के कर्म और संघर्ष की साक्षी है। वे अंत में कहते हैं कि, "मनुष्य यथार्थ को रचता ही नहीं, बल्कि उसे भोगता भी है।"

2. 'हँसते हुए मेरा अकेलापन' शीर्षक डायरी के प्रथम तीन खण्डों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर- 'हँसते हुए मेरा अकेलापन' मलयज के द्वारा रचित डायरी है, जिसमें उनके जीवन के सच्चें अनुभवों और विचारों का वर्णन है। पहली डायरी में उन्होंने रंगों के सिद्धांत से बताया कि गहरे रंग "रचना" को स्थायी बनाते हैं, दूसरी डायरी में उन्होंने समाज और धरती के बदलते रूप पर चिंता जताई है, तीसरी डायरी में पत्र न मिलने पर हुई बेचैनी को लिखे हैं। और आगे की डायरियों में उन्होंने प्रकृति और आम लोगों का बहुत सुंदर चित्रण कियें हैं। कवि कहते है मनुष्य यथार्थ को रचता ही नहीं, बल्कि उसे भोगता भी है। और उन्होंने ये भी कहा है कि, जीवन की सुरक्षा समस्याओं से डरकर भागने में नहीं, बल्कि संघर्ष करने में है।

3. चित्रकारी की किताब में लेखक ने कौन-सा रंग सिद्धान्त पढ़ा था?

उत्तर- लेखक चित्रकला की किताब में पढ़ा है कि चमकीले और तेज रंग जल्दी ध्यान खींचते हैं, लेकिन उनकी चमक जल्दी फीकी पड़ जाती है। जबकि गहरे और सादे रंग रचना को स्थायी बनाते हैं। इससे पता चलता है कि व्यक्ति का अंतर गुण ही उसकी सच्ची और टिकाऊ पूँजी है।

4. रचना और दस्तावेज में क्या फर्क है? लेखक दस्तावेज को रचना के लिए कैसे जरूरी बताता है?

उत्तर- दस्तावेज सिर्फ घटनाओं का साधारण विवरण होता है, जबकि रचना उन घटनाओं की सुंदर और भावनात्मक अभिव्यक्ति होती है। दस्तावेज रचना की नींव होती है बिना दस्तावेज के रचना पूरी नहीं होती, इसलिए लेखक उसे जरूरी मानते हैं।

5. लेखक अपने किस डर की बात कहता है? इस डर की खासियत क्या है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- लेखक ने 25 जुलाई 1981 को डायरी में डर की चिंता जतायी है। लेखक को बीमारी, आर्थिक कठिनाई और परिवार की चिंता का डर सताता है। जब कोई बीमार होता है या घर का सदस्य देर से लौटता है, तो वें घबरा जाते हैं। ये डर उसकी असुरक्षा और कमजोर आर्थिक स्थिति को दिखाता हैं।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. आदमी यथार्थ को जीता ही नहीं, यथार्थ को रचता भी है|

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति मलयज के द्वारा रचित "हँसते हुए मेरा अकेलापन" डायरी से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना है कि, आदमी सिर्फ यथार्थ को जीता ही नहीं, बल्कि उसे रचता भी है। अर्थात् हम जो अनुभव करते हैं, वह यथार्थ है, और जिसे अपने कर्म और प्रयास से रचते हैं। वही जीवन की गति है।

2. इस संसार में संपृक्ति एक रचनात्मक कर्म है। इस कर्म के बिना मानवीयता अधूरी है।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति मलयज के द्वारा रचित "हँसते हुए मेरा अकेलापन" डायरी से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से

लेखक का कहना है कि, इस संसार में जुड़ाव बहुत जरूरी है। दुनिया से जुड़े रहकर ही हम अपने कर्मों का अनुभव कर सकते हैं और उसे बदल सकते हैं। यही मानव जीवन का सही उद्देश्य है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. डायरी क्या है? [2015, 2016, 2017, 2023]
अथवा, डायरी क्या है? डायरी क्यों लिखनी चाहिए?
उत्तर- डायरी जीवन में घटित घटनाओं को, भावनाओं को और अनुभवों को लिखने का एक माध्यम है। डायरी लिखने से इंसान ईमानदार, विचारशील और आत्म-विश्लेषी बन जाता है।

2. डायरी का लिखा जाना क्यों मुश्किल है? [2012, 2013, 2016, 2023]
उत्तर- डायरी लिखना इसलिए मुश्किल है, क्योंकि इसमें व्यक्ति को अपने बारे में सच-सच लिखना पड़ता है। अपनी गलतियाँ स्वीकार करना कठिन होता है, इसलिए लोग झूठ या छिपाव कर लेते हैं। अतः डायरी लिखना बहुत मुश्किल है।

3. 'धरती का क्षण' से क्या आशय है? [2020]
उत्तर- 'धरती का क्षण' का मतलब है — इस धरती पर घटने वाली सच्ची घटनाएँ और अनुभव। लेखक इन सच्चे घटने और अनुभवों को अपनी रचना में लिखकर उसे और सुंदर बनाते हैं।

4. किस तारीख की डायरी आपको सबसे प्रभावी लगी और क्यों?
उत्तर- मुझे 9 दिसम्बर 1978 की डायरी सबसे ज्यादा प्रभावी लगी, क्योंकि इसमें लेखक साफ कहते है कि "हर लेखन रचना नहीं होता"। जब लेखन में एक लेखक का अनुभव और सच्चाई जुड़ती है, तभी वह रचना बनती है।

5. डायरी के इन अंशों में मलयज की गहरी संवेदना घुली हुई है। इसे प्रमाणित करें। [2023]
उत्तर- मलयज बहुत भावुक और संवेदनशील लेखक हैं। उनकी डायरी में प्रकृति और जीवन के प्रति गहरी भावना दिखाई देती है। जैसे — देवदार के पेड़, कौओं की कतार, सेब बेचती लड़की इन सभी में उनकी कोमल संवेदनाएं झलकती है।

6. रचे हुए यथार्थ और भोगे हुए यथार्थ में क्या सम्बन्ध है?
उत्तर- रचा हुआ यथार्थ वह है जो हम अपने अनुभव और कर्म से बनाते हैं। भोगा हुआ यथार्थ वह है जिसे हम या दूसरे लोग अनुभव करते हैं। जो रचा जाता है, वही बाद में भोगा जाता है। बिना रचना के भोग नहीं हो सकता।

7. लेखक के अनुसार सुरक्षा कहाँ है? वह डायरी को किस रूप में देखना चाहता है?
उत्तर- लेखक के अनुसार सुरक्षा मैदान छोड़कर भागने में नहीं, संघर्ष करने में है और डायरी लिखने में है। लेखक डायरी को एक सच्चे मित्र के रूप में देखना चाहते हैं।

8. अर्थ स्पष्ट करें-
एक कलाकार के लिए यह निहायत जरूरी है कि उसमें 'आग' हो और वह खुद 'ठण्डा' हो।
उत्तर- इन पंक्तियों का अर्थ है कि एक कलाकार के अंदर जोश और भावना की आग होनी चाहिए, ताकि वह एक सच्ची रचना कर सके। लेकिन बाहर से उसे शांत रहना चाहिए। तभी सच्ची कला जन्म लेती है।

12. तिरिछ

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. रिरिछ कहानी का सारांश लिखें | [2016, 2020]
उत्तर- 'तिरिछ' कहानी उदय प्रकाश के द्वारा रचित है। यह कहानी पिता-पुत्र के संबंधों, गाँव के भोलेपन और शहर की क्रूरता के बीच के विरोधाभास को दर्शाती है। यह कहानी लेखक के बचपन के अनुभवों और उसके पिता से जुड़ी एक दुखद घटना पर केंद्रित है। 'तिरिछ' एक अत्यंत विषैली जंतु है, जिसके बारे में गाँव में यह अंधविश्वास प्रचलित है कि उसके काटने पर आदमी की मृत्यु तुरंत हो जाती है। एकदिन लेखक के पिता जी को जंगल में 'तिरिछ' काट लेता है। गाँव वालों के पारंपरिक उपचारों और झाड़-फूंक के बाद, वे उन्हें शहर ले जाते हैं। शहर में उनको बहुत अपमानित किया जाता है जिससे उनका मानसिक स्थिति बिगड़ जाता है। लोग उनकी मदद करने के बजाय उन्हें प्रताड़ित करते हैं। शहर के लोगों का यह क्रूर व्यवहार उनके मानसिक संतुलन को पूरी तरह बिगाड़ देता है और अंततः उनकी मृत्यु हो जाती है।

2. बैंक और थाने के पात्रों का परिचय अपने शब्दों में दीजिए।
उत्तर- • कैशियर अग्निहोत्री- डरपोक और संदेह करने वाला व्यक्ति। पिता जी को देखकर डर गया और बिना वजह अलार्म बजा दिया।
• चौकीदार थापा- फुर्तीला लेकिन हिंसक व्यक्ति। बिना कुछ पूछे पिता जी को पकड़ लिया और मारने लगा।
• असिस्टेंट ब्रांच मैनेजर मेहता- शांत और समझदार व्यक्ति, लेकिन संवेदनहीन। उसने किसी की मदद नहीं की, बस औपचारिक आदेश दिया।
• एस.एच.ओ. राघवेन्द्र प्रताप सिंह- थानेदार था, जिसे पिता जी की बात समझ नहीं आई। वह खुद परेशान था, इसलिए

पिता जी की हालत पर ध्यान नहीं दे पाया। बाद में उसे पछतावा हुआ।

3. लेखक उदय प्रकाश के पिता के चरित्र का वर्णन अपने शब्दों में दीजिए [2020, 2025]

उत्तर- उदय प्रकाश के पिता जी गाँव के सीधे-सादे व्यक्ति थे। वे शांत और मितभाषी थे, कम बोलते थे और झगड़ा-झंझट से दूर रहते थे। उन्हें शहर से डर लगता था, इसलिए वे शहर जाना नहीं चाहते थे। कहानी में उनका व्यक्तित्व लाचार और दयनीय दिखाया गया है। क्योंकि उन्हें पता नहीं था कि उनकी सरलता आधुनिक समय में कमजोर पड़ सकती है। उनके अनुभवों के जरिए कहानीकार ने समाज और न्याय की कठिनाइयाँ दिखाई हैं।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. आदमी भागता है तो जमीन पर वह सिर्फ अपने पैरों के निशान नहीं छोड़ता, बल्कि हर निशान के साथ वहाँ की धूल में अपनी गंध भी छोड़ जाता है। [2014, 2016]

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति उदय प्रकाश के द्वारा रचित 'तिरिछ' कहानी से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना है कि, जब कोई आदमी डरकर भागता है तो जमीन पर अपने पैरों के निशान के साथ अपनी गंध भी छोड़ देता है। तिरिछ उसी गंध के सहारे उसका पीछा करता रहता है।

2. 'चाँदनी में जो ओस और शीत है उसमें अमृत होता है।'[2017]

उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति उदय प्रकाश के द्वारा रचित 'तिरिछ' कहानी से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना है कि, चाँदनी में शीतलता और ओस की बूँदे होती है। जो मनुष्य को अमृत के समान अनुभूति कराता है।

3. "आश्चर्य था कि इतने लंबे अर्से से उसके अड्डे को इतनी अच्छी तरह से जानने के बावजूद कभी दिन में आकर मैंने उसे मारने की कोई कोशिश नहीं की थी।" [2021]

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति उदय प्रकाश के द्वारा रचित 'तिरिछ' कहानी से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना है कि, मैं तिरिछ के ठिकाने को बहुत पहले से जानता था, फिर भी उसे कभी मारने की कोशिश नहीं की। यह मेरे अंदर के डर को दिखाता है। जैसे समाज की बुरी चीजों को जानकर भी हम उसका सामना नहीं कर पाते।

4. "मुझे यह सोचकर एक अजीब सी राहत मिलती है और मेरी फँसती हुई साँसें फिर से ठीक हो जाती हैं कि उस समय पिताजी को कोई दर्द महसूस नहीं होता रहा होगा।" [2022, 2025]

उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति उदय प्रकाश के द्वारा रचित 'तिरिछ' कहानी से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना है कि, मरते समय पिता जी को दर्द नहीं हुआ होगा। यह उसकी संवेदनशीलता और मन की पीड़ाभाव को दर्शाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्

1. तिरिछ क्या है? कहानी में यह किसका प्रतीक है?[2014, 2023]

उत्तर- तिरिछ एक भयानक और जहरीला जन्तु है। जो जंगल में रहता है। उसमें काले नाग से भी सौ गुना ज्यादा जहर होता है। यह डर और पुरानी रूढ़ियों का प्रतीक है।

2. क्या यहाँ तिरिछ केवल जानवर भर है? यदि नहीं तो उससे आँख क्यों नहीं मिलाना चाहिए?

उत्तर: नहीं, तिरिछ केवल जानवर नहीं है। बल्कि यह पुरानी रूढ़ियों का भी प्रतीक है। उससे सीधे आँख इसलिए नहीं मिलाना चाहिए क्योंकि वह जिसके पीछे एकबार लग जाता है उसे मारकर ही दम लेता है।

3. तिरिछ लेखक के सपने में आता था और वह इतनी परिचित आँखों से देखता था कि लेखक अपने आपको रोक नहीं पाता था। यहाँ परिचित आँखों से क्या आशय है?

उत्तर- "परिचित आँखों" का मतलब ऐसी आँखों से है, जो किसी को पहले से जानता हों। लेखक के सपने में तिरिछ उसे इस तरह देखता है जैसे वह लेखक को अच्छी तरह पहचानता हो। इसलिए लेखक खुद को रोक नहीं पाता है।

4. तिरिछ को जलाने गए लेखक को पूरा जंगल परिचित क्यों लगता है?

उत्तर- लेखक को पूरा जंगल परिचित इसलिए लगता है क्योंकि, वह सपने में कई बार उस जंगल को देख चुका था। तिरिछ से अपना जान बचा चुका था। इसलिए पूरा जंगल जाना-पहचाना लगता है।

5. शहर के प्रति लेखक को जन्मजात भय क्यों था? तिरिछ कहानी के आधार पर उत्तर दें।

उत्तर- लेखक के पिता को शहर पसंद नहीं था क्योंकि वहाँ के लोग निर्दयी और संवेदनहीन थे। वहाँ उनके साथ बहुत बुरा व्यवहार हुआ था। पर किसी ने मदद नहीं की तो उन्हें लगा अब शहर में इंसानियत नहीं बचा है। इसी कारण उनके मन में जन्मजात डर बैठ गया।

6. तिरिछ कहानी में वर्णित 'शहर' के चरित्र से आप कितना सहमत हैं?

उत्तर- तिरिछ कहानी में शहर को निर्दयी और स्वार्थी बताया गया है। शहर में भीड़ और भागदौड़ ज्यादा है, पर लोगों में इंसानियत बहुत कम हैं। सड़क पर किसी की मौत हो जाए, पर कोई मदद नहीं करता। अतः मैं केवल शहर की सुविधाओं से सहमत हूँ।

7. लेखक के पिता को गाँव की पगडंडियाँ याद रहती थीं, पर शहर की सड़कें क्यों नहीं?

उत्तर- लेखक के पिता जी गाँव में पले-बढ़े थे, इसलिए उन्हें गाँव की हर पगडंडी (चीजे) याद थी। लेकिन शहर की भीड़ और भागदौड़ उन्हें अच्छा नहीं लगता था। इसलिए वें शहर की सड़कों को याद नहीं रख पाते थे।

8.लेखक के पिता अपना परिचय हमेशा 'राम स्वारथ प्रसाद.....एक्स स्कूल हेडमास्टर. विलेज हेड ऑफ बकेली के रूप में देते थे, ऐसा क्यों? स्कूल और गाँव के बिना वे अपना परिचय क्यों नहीं देते थे ?

उत्तर- क्योंकि, लेखक के पिता जी अपने गाँव और पद से जुड़ी पहचान पर गर्व करते थे। शहर में कोई उन्हें नहीं जानता था, इसलिए वे अपने नाम के साथ स्कूल और गाँव का नाम बताते थे। यही उनका सम्मान और पूरी पहचान थी।

9. 'तिरिछ के जहर से कोई नहीं बच सकता' – इस पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- थानू का मानना था कि तिरिछ का काटा इंसान मर जाता है, लेकिन वास्तव में पिता जी की मृत्यु जहर से नहीं, बल्कि प्यास, धतूरे से हुई थी। अतः ये केवल अफवाह है कि तिरिछ के काटने पर लोग मर जाते हैं।

10. अब लेखक को तिरिछ का सपना क्यों नहीं आता?

उत्तर- क्योंकि अब लेखक समझ चुका है कि तिरिछ सिर्फ एक सपना नहीं, बल्कि डर और समाज के आतंक का प्रतीक था। जब वह उस डर से बाहर आ गया और सच्चाई जान गया, तो वह सपना भी खत्म हो गया।

13. शिक्षा

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. शिक्षा शीर्षक लेख का सारांश लिखें। [2023]

उत्तर- "शिक्षा" शीर्षक पाठ जे. कृष्णमूर्ति के द्वारा रचित है। जिसमें उन्होंने शिक्षा का असली उद्देश्य समझाया है। वे कहते हैं शिक्षा इंसान को स्वतंत्र, निडर और समझदार बनाता है। शिक्षा लोगों को एक अच्छा नागरिक बनाता है और छोटी सोच से मुक्त करता है। यह हमें जीवनभर सीखने और बेहतर बनाने में मदद करती है। यह हमारे व्यवहार को सुधारती है, हमें मिल-जुलकर रहना सिखाती है। शिक्षा का असली उद्देश्य केवल नौकरी पाना नहीं है, बल्कि जीवन को उज्जवल बनाना है। सत्य की खोज हमें खुद करनी होती है। अगर हमें सच में ज्ञान पाना हैं, तो मन को सब बंधनों से मुक्त करना होगा। ज्ञान हमारे भीतर की वह रोशनी है जो हमें सही रास्ता दिखाती है।

2. क्रांति करना, सीखना और प्रेम करना तीनों पृथक-पृथक प्रक्रियाएँ हैं या नहीं कैसे? [2020]

उत्तर- क्रांति समाज की बुरी परम्पराओं को तोड़कर नई सोच लाने के लिए की जाती है। सीखना जीवनभर चलता रहता है, हम हर चीज से कुछ न कुछ सीखते हैं। जब हम प्रेम से और ध्यान से सीखते हैं, तो नई खोज आसानी से कर पाते हैं। इसलिए क्रांति करना, सीखना और प्रेम करना अलग नहीं हैं, ये तीनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और एक साथ चलने वाली प्रक्रियाएँ हैं।

3. 'बचपन से ही आपका ऐसे वातावरण में रहना अत्यंत आवश्यक है जो स्वतंत्रापूर्ण हो।' क्यों? 'शिक्षा' शीर्षक पाठ के अनुसार बताइए। [2025, 2022]

उत्तर- बचपन से ही स्वतंत्र वातावरण में रहना आवश्यक है क्योंकि डर के माहौल में बच्चे का सही विकास नहीं हो पाता। जहाँ भय होता है, वहाँ बुद्धि और समझ नहीं बढ़ती। स्वतंत्र वातावरण में बच्चा बिना डर के सोचता, सीखता और प्रश्न करता है। इससे वह सच्चाई और जीवन के अर्थ को समझ पाता है। इसलिए शिक्षा के लिए स्वतंत्र और अनुशासित वातावरण जरूरी है।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. यहाँ प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी के विरोध में खड़ा है और किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचने के लिए प्रतिष्ठा, सम्मान, शक्ति व आराम के लिए निरंतर संघर्ष कर रहा है [2020]

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति जे. कृष्णमूर्ति द्वारा रचित " शिक्षा " शीर्षक पाठ से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना है कि प्रत्येक इंसान आज किसी न किसी के विरोध में खड़ा है। वह सम्मान, शक्ति, और आराम पाने के लिए लगातार संघर्ष कर रहा है। दुनिया में स्वार्थ, लड़ाई और प्रतियोगिता बढ़ती जा रही है। हमें ऐसे माहौल से मुक्त होकर स्वतंत्र और निडर वातावरण बनाना चाहिए, जहाँ हम अपने सत्य की खोज कर सकें।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जीवन में विद्रोह का क्या स्थान है? [2016, 2025]

उत्तर - जीवन में विद्रोह का महत्त्वपूर्ण स्थान है। विद्रोह से समाज की बुराइयाँ और गलत परम्पराएँ समाप्त होती हैं। विद्रोही व्यक्ति नया रास्ता दिखाता है और सच्चाई की खोज करता है। सच्चाई को समझने के लिए डर और पुरानी परम्पराओं से मुक्त होना जरूरी है।

2. जहाँ भय है वहाँ मेधा नहीं हो सकती। क्यों? [2020]

उत्तर - जहाँ भय होता है, वहाँ मेधा (बुद्धि) विकसित नहीं हो सकती। डर के कारण लोग खुलकर सोच नहीं पाता। डर हमारी सोच को सीमित कर देता है और सही निर्णय लेने से रोकता है। इसलिए भय के वातावरण में बुद्धि और समझ का विकास नहीं हो पाता।

3. 'जीवन क्या है?' इसका परिचय लेखक ने किस रूप में दिया है?

उत्तर - लेखक के अनुसार जीवन बहुत विशाल और रहस्यमय है। इसमें प्रकृति, भावनाएँ, धर्म, ध्यान, प्रेम, दुख-सुख सब शामिल हैं। शिक्षा ही हमें जीवन को सही ढंग से समझने में मदद करती है।

काव्यखंड
अध्याय 1. कड़बक

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न: -

1. पहला कड़बक का सारांश अथवा भावार्थ लिखें |

उत्तर - यह खंड पदमावत के प्रारंभिक छंद स्तुति खंड से लिया गया है। इसमें कवि मलिक मुहम्मद जायसी अपने बारे में और अपनी कविता के बारे में कहते हैं- मेरे पास एक ही नेत्र है, फिर भी मैं गुणवान हूँ। मेरी कविता को जो भी सुनता है, वह मोहित हो जाता है। भगवान ने मुझे चाँद की तरह सुंदर तो बनाया, लेकिन जैसे चाँद पर दाग होता है, वैसे ही मेरे रुप में भी एक कमी है (एक आँख और एक कान दी है)। फिर भी मैं अपनी कविता से चाँद की तरह उजाला फैला रहा हूँ और शुक्र तारे के समान एक ही आँख से इस दुनिया को देखता हूँ। जैसे आम के पेड़ में जब तक मंजरी नहीं आती, तब तक उसमें खुशबू नहीं होती और जैसे सोने को पिघलाने पर ही उसकी चमक बढ़ती है, वैसे ही मनुष्य की जब तक कठीन परीक्षा नहीं होती, तब तक उसमें असली चमक नहीं आती। कवि कहते हैं, मेरी आँख दर्पण की तरह साफ और निर्मल है। मेरे इस गुण के वजह से ही बड़े-बड़े सुंदर और विद्वान लोग मेरे आगे सिर झुकाते हैं और मेरे चरण छूते हैं।

2. दूसरा कड़बक का सारांश अथवा भावार्थ लिखें |

उत्तर- यह खंड पदमावत के अंतिम छंद "उपसंहार खंड" से लिया गया है। इसमें कवि मलिक मुहम्मद जायसी अपने कविता के बारे में कहते हैं- मैंने यह प्रेम काव्य रचा और लोगों को सुनाया। जिसने भी इसे सुना, उसे प्रेम की पीड़ा का सुख मिला। मैंने इस काव्य को अपने हृदय के खून से लिखा है। प्रेम को आँसुओं के जल से भिगोया है। मैंने इसे इसलिए लिखा ताकि मेरे मरने के बाद भी यह काव्य मुझे जीवित रख सके। अब न तो राजा रत्नसेन हैं, न बुद्धिमान तोता सुवा, न सुल्तान अलाउद्दीन, न राघवचेतन और न ही रानी पद्मावती। इनमें से कोई भी आज जीवित नहीं है, लेकिन उनकी कहानी और यश आज भी जीवित है। जैसे फूल मुरझा जाने के बाद भी उसकी सुगंध रह जाती है, वैसे ही महान लोगों की मृत्यु के बाद भी उनकी कीर्ति जीवित रहती है। और कीर्ति ऐसी चीज है जिसे कोई बेच और खरीद नहीं सकता। जो भी मेरे दिल के खून से लिखे गए इस प्रेम काव्य को पढ़ेगा, वह मुझे जरूर दो प्यार भरे शब्दों में याद करेगा।

3. पहले 'कड़बक' में कलंक, काँच और कंचन से क्या तात्पार्य है? 2020

उत्तर- कड़बक शीर्षक कविता के रचनाकार मलिक मुहम्मद जायसी है। इन्हे 'प्रेम के पीर' कवि भी कहा जाता है। ईश्वर ने जायसी को चन्द्रमा के समान तो बनाया परंतु उन्हें कलंकीत भी कर दिया। फिर भी कवि चन्द्रमा के समान अपने काव्य की प्रकाश को संसार में फैला रहे है । कलंक का अर्थ है कलंकित बिना दोष के आरोप लगाना, काँच का अर्थ है कच्ची धातु और कंचन का अर्थ है सोना। जबतक पात्र में काँच को गलाया नही जाता तबतक उसमें चमक नही आती है।

4. जायसी का काव्यात्मक परिचय दें। 2015, 2016

उत्तर- मलिक मुहम्मद जायसी को प्रेम के पीर कवि कहा गया है। जायसी भक्ति काल के महान कवि थे। जायसी अवधी भाषा के कवि थे। इनकी महान रचना कड़बक शीर्षक कविता है जो पद्मावत से लिया गया है। चेचक के कारण ये रूपहीन व काले रंग के फकीर संत थे। इनकी अन्य रचना- पद्मावत, अखरावट, चित्ररेखा, कहरानामा, आखिरी कलाम, होलीनामा, इतरावत आदि है।

5. पहले कड़बक में व्यंजित जायसि के आत्मविश्वास का परिचय अपने शब्दों में दें।

उत्तर- कड़बक शीर्षक कविता के रचनाकार मलिक मुहम्मद

जायसी है। पहला कड़बक पद्मावत के पहला छंद स्तुति खंड से लिया गया है। एक नेत्र के होते हुए भी जायसी बहुत गुणी व्यक्ति थे। उनकी काव्य में वो जादू था जो सुनता वो मोहित हो जाता था। ईश्वर ने उन्हे चन्द्रमा के समान तो बनाया परंतु कलंकित भी कर दिया। फिर भी वे अपने काव्य की प्रकाश से संसार को प्रकाशित किये। एक ही आँख से पूरा संसार देख लिये। जायसी को आत्मविश्वास था कि जिस प्रकार फूल मुरझा जाती है किन्तु सुगन्ध रह जाती है उसी प्रकार मेरे मरने के बाद भी मेरा नाम, प्रतिष्ठा और कीर्ति जग मे रहेगा ।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. "धनि सो पुरुख जस कीरति जासू। 2019
फूल मरै पै मरे न बासू ।। "

उत्तर- पस्तुत पंक्ति जायसी रचित कविता कड़बक से लिया गया है। जो पद्मावत के अंतिम छंद (उपसंहार खंड) से संकलित है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना हैं कि जिस प्रकार फूल के मुरझा जाने पर उसकी सुगंध रह जाती है ठीक उसी प्रकार कृतिमान पुरूष के मर जाने के बाद भी उसकी मान, प्रतिष्ठा व कीर्ति जीवित रहती है।

2. 'एक नैन जस दरपन तौ तेहि निरमल भाउ।
सब रूपवंत गहि मुख जोवहिं कई चाउ ।।" 2012

उत्तर - पस्तुत पंक्ति जायसी रचित कविता कड़बक से लिया गया है। जो पद्मावत के प्रारंभिक छंद (स्तुतिखंड) से संकलित है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना हैं कि एक नेत्र के होते हुए भी जायसी गुणवान है उनका यह नेत्र दर्पण की तरह निर्मल और स्वच्छ हैं उनके इसी गुण के कारण बड़े-बड़े सुंदर विद्वान लोग मेरे आगे सिर झुकाते हैं और मेरा गुणगान गाते हैं|

3. जौं लहि अंबहि डाभ न होई। तौ लहि सुगंध बसाई न सोई।
कीन्ह समुन्द्र पानी जौं खारा। तौ अति भएऊ असूझ अपारा।

उत्तर- पस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्यपुस्तक दिगांत भाग - 2 के कड़बक कविता शीर्षक पाठ से लिया गया है। जो पद्मावत के प्रारंभिक छंद (स्तुतिखंड) से संकलित है। कवि कहते है जबतक आम में मंजरी नहीं होती तबतक उसमे सूगंध नहीं आती। विधाता ने सागर का जल भी खारा बना दिया तभी वह आकाश तक ऊँचा हो गया।

लघु उत्तरीय प्रश्न: -

1. जायसी की दो रचनाओं के नाम लिखें | 2019

उत्तर - मलिक मुहम्मद जायसी की दो रचनाओं के नाम है-
(i) पद्मावत
(ii) अखरावट

2. कड़बक के कवि की सोच क्या है? 2015

उत्तर- कड़बक के कवि जायसी की सोच यह है कि जिस प्रकार फूल झड़कर नष्ट हो जाता है पर उसकी सुगंध रह जाती है। ठीक उसी प्रकार कवि भी एक दिन मर जायेंगे पर लिखि कविता के जरीए वे जग में अमर रहेंगे ।

3. मल्लिक मुहम्मद जायसी की प्रेम संबंधी अवधारणा क्या हैं? 2018

उत्तर- मलिक मुहम्मद जायसी प्रेम की पीर के कवि है। इन्हें प्रेममार्गी कवि भी कहते हैं। जायसी के कविता में प्रेम के भाव अत्यंत सुखदायक है। इनके प्रेम कहानी में प्राणों का प्राणो से, हृदय का हृदय से मेल है। जायसी की प्रेम कविता शहद के जैसी मीठी है।

4. कवि ने अपनी एक आँख की तुलना दर्पण से क्यों की है?

उत्तर - कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने अपनी एक आँख की तुलना दर्पण से इसलिए किये क्योंकि दर्पण वास्तविक चेहरा ही दिखाता हैं। दर्पण के सामने जो रहेगा दर्पण उसी का प्रतिबिंब दिखाता है कवि दर्पण की तरह ही निर्मल और स्वच्छ स्वभाव के हैं।

5. 'रक्त कै लेई' का क्या अर्थ है?

उत्तर- 'रक्त कै लेई' का यह अर्थ है कि जायसी ने अपने काव्य को रक्त की लेई से जोड़ा है जिसमें नेत्रों की आँसु की मोती और प्रेम रस का संगम है।

6. 'मुहम्मद यहि कबि जोरि सुनावा।' यहाँ कवि ने 'जोरि' शब्द का प्रयोग किस अर्थ में किया है?

उत्तर- कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने जोरि शब्द का प्रयोग 'जोड़ना' के अर्थ में किये हैं क्योंकि जोर का अर्थ अवधि भाषा में जोड़ना हीं होता है।

7. कवि ने किस रूप में स्वयं को याद रखे जाने की इच्छा व्यक्त की है?

उत्तर- कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने अपने काव्य की रचना रक्त की लेई जोरकर किये है। इसमें गहरे प्रेम की पीड़ा है। कवि की इच्छा है कि जिस प्रकार फूल के मुरझा जाने के बाद भी उसकी सुगंध रह जाती है ठीक उसी प्रकार मेरे मरने के बाद भी मैं काव्य के रूप में संसार में जीवित रहूँगा।

2. पद (सूरदास)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न: -

1. सूरदास के पहला पद का सारांश अथवा भावार्थ लिखें |

उत्तर- सूरदास रचित इस "पद" में भोर होने और कृष्ण को जगाने का वर्णन है। जहां माता यशोदा अपने पुत्र से कहती हैं- अब भोर हो गई है, कमल के फूल खिल गए हैं, रातरानी (कुमुद) के फूल मुरझा गई हैं, भौंरे लताएं में छिप गए हैं, पक्षी चह-चहा रही है, गायें अपने बछड़े के पास जाने के लिए रंभा रही हैं, चाँद की रोशनी फीकी पड़ गई है और सूरज की किरणें चारों ओर फैल रही हैं। गाँव के लोग भजन-कीर्तन गा रहे हैं। इसलिए हे ब्रजराज कुमार! हे कमलनयन! अब उठ जाइए, सुबह हो गई है।

2. सूरदास के दूसरे पद का सारांश अथवा भावार्थ लिखें |

उत्तर- सूरदास रचित इस "पद" में बालक कृष्ण नंदबाबा की गोद में बैठकर कुछ खा रहे हैं, कुछ धरती पर गिरा रहे है, उन्हें दही बहुत पसंद आती है। वे दही, मिश्री और माखन मिलाकर खुद खाते हैं और कुछ नंदबाबा के मुख में भी लगाते हैं। कृष्ण के इस रुप को देखकर नंदबाबा और माता यशोदा बहुत खुश होते हैं। इस समय जिस रस का पान नंदबाबा और माता यशोदा कर रही है, वह तीनों लोक में दुर्लभ है। उसी जूठन को सूरदास नंदबाबा से मांग रहे हैं।

3. सूरदास रचित पठित पाठ के आधार पर सूर के वात्सल्य वर्णन की विशेषताएँ लिखिए | 2022

उत्तर - वात्सल्य रस वह रस है जिसमें माता–पिता और बच्चे के बीच का प्यार और स्नेह दिखाया जाता है। सूरदास वात्सल्य रस के सबसे बड़े कवि हैं। पहले पद में माँ यशोदा बड़े प्यार से कोमल और मीठी आवाज़ में अपने बालक कृष्ण को जगाती हैं। इससे माँ की ममता और स्नेह दिखता है। और दूसरे पद में नंद बाबा की गोद में बैठे कृष्ण कुछ खाते हैं और कुछ गिरा देते हैं। इससे पिता का प्रेम और दुलार दिखाई देता है। इस तरह सूरदास जी के दोनों पद में वात्सल्य रस का सुंदर वर्णन है।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. आपुन खात, नंद मुख नावत, [2013, 2017, 2020]
जो रस नंद – जसोदा बिलसत, सो नहिं तिहूँ भुवनियाँ |

उत्तर: - प्रस्तुत पंक्ति सूरदास रचित "पद" शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि कृष्ण अपने से खाना खा रहे हैं और नंद बाबा के मुख में भी लगा रहे है। इस समय जिस रस का पान नंदबाबा और माता यशोदा कर रही है, वह तीनों लोक में दुर्लभ है।

4. "कछुक खात, कुछ धरनिगिरावत, छबि निरखति नंद-रानियाँ" [2023]

उत्तर: - प्रस्तुत पंक्ति सूरदास रचित "पद" शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि कृष्ण नंदबाबा की गोद में बैठकर कुछ खा रहे है, कुछ धरती पर गिरा रहे है, कुछ नंद बाबा के मुख में लगा रहे हैं। कृष्ण के इस रुप को नंदबाबा और माता यशोदा देखे जा रहे हैं।

5. 'जो रस नंद – जसोदा बिलसत सो नहीं तिहूँ भुवनियाँ |
भोजन करि नंद अचमन लीन्हों, माँगत सूर जूठनियाँ | [2011]

उत्तर: - प्रस्तुत पंक्ति सूरदास रचित "पद" शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि नंदबाबा और माता यशोदा इस समय जिस रस का पान कर रहें हैं वह तीनों लोक में दुर्लभ है। और इस जूठन को नंदबाबा से सूरदास मांग रहे हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न: -

1. ब्रजभाषा के प्रारम्भिक कवि कौन हैं? [2019]

उत्तर: - ब्रजभाषा के प्रारंभिक कवि सूरदास जी हैं जिन्हें कृष्ण भक्तिधारा के सर्वश्रेष्ट कवि कहा जाता हैं |

2. कृष्ण खाते समय क्या – क्या करते हैं? [2023]

उत्तर:- कृष्ण नंदबाबा की गोद में बैठकर खाते समय- कुछ खाते हैं, कुछ धरती पर गिराते है, कुछ नंद बाबा के मुख में लगाते हैं| कृष्ण को दही में अत्यंत रूचि है |

3. कवि भगवान कृष्ण को जगाने के लिए क्या – क्या उपमा देते हैं? [2019]

उत्तर: - कवि सूरदास, भगवान कृष्ण को जगाने के लिए ब्रजराज कुँवर और अंबुजकर धारी कहते हैं |

4. गाये किस ओर दौड़ पड़ी? [2024]

उत्तर: - सुबह होते ही गाये अपने बछड़े के पास जाने के लिए उसके ओर दौड़ पड़ी |

5. प्रथम पद में किस रस की व्यंजना हुई है? [2023]

उत्तर:- सूरदास के प्रथम पद में वात्सल्य रस की व्यंजना हैं

3. पद (तुलसीदास)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न: -

1. तुलसीदास के पहले पद का सारांश अथवा भावार्थ लिखें |

उत्तर - इस पद में तुलसीदास माँ सीता से कहते है, हे माते! कभी उचित अवसर पाकर मेरे प्रभु को मेरी याद दिला देना, मेरी करूणा भरी कथा जरुर सुना देना। मैं सब प्रकार से गरीब हूँ, अँगहीन हूँ, दुर्बल हुँ, मलीन हूँ और पापीयों का पापी हूँ। प्रभु का नाम लेकर ही पेट भिरता हूँ। और प्रभु की दासी (सीता) का भी दास हूँ। मेरी सारी देशा को बताते छुए मेरा नाम भी बता देना। जब प्रभु मेरी दासतान सुनेंगे तो मेरी बिगड़ी भी बन जाएगी। है जगत जननी आपको अपने जग के वासियों की सहायता करनी होगी, मैं तो प्रभु का नाम लेकर, गुणगान गाकर भवसागर उतर जाऊँगा।

2. तुलसीदास के दूसरे पद का सारांश अथवा भावार्थ लिखें |

उत्तर- इस पद में तुलसीदास अपने प्रभु राम से कहते है कि, आज मैं सुबह से ही आपके द्वार पर आकर बैठा हूँ। मैं भिक्षुक की तरह भोजन रूप में आपके दर्शन के लिए ललायित हूँ। हे प्रभु! कलियुग में भीषण अकाल पड़ चका है सभी कष्ट में दिखाई दे रहा हैं। लोग अधर्मी होकर भी बड़े ठाट से रह रहे है, मानो जैसे कोढ़ में खाज हो गई हो। मैं भयभीत होकर साधु जनों से इसका उपाय पछा तो उन्होंनें "राम नाम का जप" बताया। और बोले लोगों का कष्ट हरने के लिए श्रीराम तत्पर रहेंगे, हे प्रभु आप तो भक्त शिरोमणि हैं। मैं जन्म से भक्ति का भूखा हूँ। मेरे जैसे ही और भी भक्त आपके द्वार पर सुबह से आकर बैठे हैं, उन्हें भी भक्ति सुधा भोजन अचमन कराइए।

3. पठित पर्दों के आधार पर तुलसी की भक्ति-भावना का परिचय दीजिए। [2020]

उत्तर- तुलसीदास राम भक्तिधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि है। वे अपना दुख प्रभु से स्वयं न कहकर मां सीता से कहलवाते हैं, कि मैं सब तरह से गरींब हूँ, अंगहीन हूँ, दूर्बल हूँ, मलिन हू, और पापियों का पार्पी हूँ। प्रभु का नाम लैकर ही पेट भरता हूं। प्रभु तो दीन बधु है, दीनो पर दया करना ही उनका चेरित्र है। प्रभु मुझे इस भवसागर से और दुख भरी पीड़ाओं जरूर पार उतारेंगे।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. दीन सब अंग हीन, छोन, मलीन, अधी, अधाई।

अथवा

नाम लै भरै उदर एक प्रभु-दासी दास कहाई।। [2015, 2024]

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित 'पद' शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि मैं सब तरह से गरींब हूँ, अंगहीन हूँ, दूर्बल हूँ, मलिन हू, और पापियों का पापी हँ। प्रभु का नाम लेकर पेट भेरता हूं और प्रभु की दासी (सीता) का भी दास हूँ।

2. कलि कराल दुकाल दारुन, सब कुभाँति कुसाजु। नीच जन, मन ऊँच, जैसी कोढ़ में की खाजु।। [2020]

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित 'पद' शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि कलियुग में भीषण अकाल पड़ चुका है सभी कष्ट में दिखाइे दे रहा हैं। लोग अधर्मी होकर भी बड़े ठाट से रह रहे है, मानो जैसे कोढ़ में खाज हो गई हो।

3. पेट भरि तुलसिहि जेवाइय भगति-सुधा सुनाजु। [2021]

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित 'पद' शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि मैं जन्म से भक्ति का भूखा हूँ। मेरे जैसे ही और भी भक्त आपके द्वार पर आकर बैठे हैं। प्रभु उसे आप भक्ति सुधा भोजन कराइए।

लघु उत्तरीय प्रश्न: -

1. तुलसी सीता से कैसी सहायता मांगते हैं? [2019, 2020, 2024]

उत्तर- तुलसीदास माता सीता से कहते है, हे माते कभी अवसर पाकर मेरी करुणा भरी कथा प्रभु को जरुर सुना देना ताकि मुझे इस भव सागर से पार निकाले।

2. तुलसी को किस वस्तु की भूख है? [2018]

उत्तर - तुलसी को प्रभु श्रीराम की भक्ति की भूख थी। वह भक्ति सुधा पान करके तृप्त होना चाहते थे ।

3. तुलसी अपनी बात सीधे राम से न कहकर सीता से क्यों कहलवाना चाहते हैं? [2019]

उत्तर - क्योंकि, तुलसीदास संकोची स्वभाव के थे। उन्हें अपनी बात राम से कहने की हिम्मत नहीं थी जितनी माता सीता से कहने की थी। वे जानते थे प्रभु श्री राम माता जानकी की बात नहीं टालेंगे।

4. तुलसी के हृदय में किसका डर है? [2023]

उत्तर- तुलसीदास के हृदय में कलयुग में पड़ने वाले भीषण अंकाल का डर था। वे जानते थे कि कलयुग में बहुत कष्ट होगा। इसलिए वे प्रभु के शरण में आ गए।

5. हिंदी की श्रेष्ठतम महाकाव्य कौन सा है? [2019]

उत्तर - हिंदी की श्रेष्ठतम महाकाव्य तुलसीदास रचित रामचरितमानस है।

6. तुलसी के अंब कहकर किसको संबोधित किया और क्या ? [2018]

उत्तर - तुलसी ने अंब कहकर माता सीता को सबोधित किया है, क्योंकि वह अपनी करुणा भरी कथा माता द्वारा प्रभु श्री राम तक पहंचाना चाहते थे। वें आजीवन राम भक्त रहना चाहते थें।

7. तुलसी के किन-किन दुर्गुणों का बखान किया ?

उत्तर :- तुलसी के स्वयं को बहुत गरीब, भूखा, कमजोर, पापी, मॉलेन , नीच, भिखारी, पेटू, लोभी आदि कहा है।

8. तुलसीदास के दोनों पद में किस रस की व्यंजना है? [2017]

उत्तर - तुलसीदास के दोनों पद में शांतमिश्रित करुणरसे की व्यंजना है।

9. रटत रिरिहा आरि और न, कौर ही तें काजु। यहां 'और' का क्या अर्थ हैं ? [2018]

उत्तर :- यहां 'और' का अर्थ है मात्र इतना ही, इससे ज्यादा नहीं वह गिरगिड़ाकर कौर के टुकड़े मांग रहे हैं।

4. छप्पय

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न: -

1. पहला छप्पय का सारांश अथवा भावार्थ लिखें |

उत्तर - छप्पय शीर्षक कविता नाभादास के द्वारा रचित है। इस छप्पय में कवि कबीरदास के बारे में बताते है कि बिना भक्ति के धर्म भी अधर्म के समान है। योग, यज्ञ, व्रत, दान सभी भजन बिना व्यर्थ है। कबीर कभी किसी के साथ पक्षपात नहीं कियें, कभी सुनि-सुनाई बातों पर विश्वास नहीं कियें। वे सदा लोगों का कल्याण कियें, चाहे वह हिन्दु हो या मुस्लिम।

2. दूसरा छप्पय का सारांश अथवा भावार्थ लिखें |

उत्तर - छप्पय शीर्षक कविता नाभादास के द्वारा रचित है। इस छप्पय में कवि सूरदास के बारे में बताते है कि उनकी रचनाओं में चमत्कार और प्रेम रस का भाव होता है। उनकी कविता को जो सुनता है, वह आनन्दित हो जाता है। उन्होंने श्रीकृष्ण के जन्म, कर्म, गुण और रूप का भी वर्णन अपने कविताओं में किये है। जो उनके गुण को अपना लेता है उसकी बुद्धि पवित्र हो जाती है। सभी लोग उनकी कविता को सुनकर उन्हें नमन करते हैं।

3. 'छप्पय' कविता का सारांश लिखें। 2016

उत्तर- 'छप्पय' कविता नाभादास के द्वारा रचित है। नाभादास सगुण उपासक रामभक्त कवि थे उनकी भक्ति राम भक्ति से थोड़ी अलग थी। इस कविता में दो छप्पय हैं पहला छप्पय में कहा गया है कि बिना भक्ति के धर्म अधर्म के समान है। योग, यज्ञ, व्रत, दान सभी भजन के बिना व्यर्थ है। और दूसरा छप्पय में कहा गया है कि सूरदास की रचनाएँ चमत्कार और प्रेम से भरा होता है। उनका वचन और वाणी प्रेम रस से भरी होती है। उनकी कविता को सुनकर सभी आनन्दित हो जाते हैं।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. सूर कवित सुनि कौन कवि, जो नहीं शिरचालन करै।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति नाभादास रचित 'छप्पय' शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि जो सूरदास के कविताओं को और उनके गुणों को सुनता है वह कभी भी सूर के बारे में गलत नहीं कहता है, बल्कि सिर झुकाकर नमन करता हैं।

2. भगति विमुख जे धर्म सो सब अधर्म करि गाए। [2012, 2021, 2023]

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति नाभादास रचित 'छप्पय' शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि "बिना भक्ति के धर्म भी अधर्म के समान है। योग, यज्ञ, व्रत, दान सब भजन के बिना तुच्छ है।

लघु उत्तरीय प्रश्न: -

1. नाभादास ने, छप्पय में कबीर के किन विशेषताओं का उल्लेख किया है? 2011, 2018, 2022

उत्तर- नाभादास ने अपने छप्पय में कबीर के उन विशेषताओं का उल्लेख किया है जो सभी धर्मो के हित में है। चाहे वह हिन्दु हो या मुस्लिम कबीर मूंह देखी और सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास नहीं कियें। सदा लोगों का कल्याण चाहे।

2. 'मुख देखी नाहीं भनी' का क्या अर्थ है? कबीर पर यह कैसे लागू होता है?

उत्तर - इसका अर्थ है- कबीर कभी मुँह देखी और सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास नहीं करते। कबीर सदा लोगों के हित में सत्य बोलते है।

3. सूर के काव्य की किन विशेषताओं का उल्लेख कवि ने किया है ?

उत्तर- नाभादास ने अपने 'छप्पय' कविता में सूरदास के उन विशेषताओं का उल्लेख किया है जिसे सुनकर और पढ़कर हम सभी उन्हे नमन करेंगे। सूर के रचनाओं में प्रेम रस भरा होता है। जो सभी पाठक को आनन्दित कर देता

4. 'कबीर कानि राखी नहीं' से क्या तात्पर्य है? 2024

उत्तर- इस पंक्ति का तात्पर्य यह है कि कबीर जी किसी के सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास नहीं करते हैं।

5. कबीर ने भक्ति को कितना महत्व दिया?

उत्तर- कबीर ने भक्ति को बहुत महत्व दिया है। भक्ति के बिना सभी धर्मो को अधर्म माना है। अर्थात् भक्ति ही जीवन का सार है।

5. कवित्त

दीर्घ उत्तरित प्रश्न – 5 अंक

1. पहला कवित का भावार्थ या सारांश लिखें |

उत्तर - इस कवित में वीर रस का वर्णन है। जहाँ कवि भूषण शिवाजी महाराज की वीरता और पराक्रम का वर्णन करते हुए कहते है, जिस प्रकार इन्द्र यमराज पर भारी हैं, समुद्र की आग जल पर भारी है, राम रावण पर भारी है, पवन बादलों पर भारी है, शिव कामदेव पर भारी है, परशुराम सहस्त्रबाहु पर भारी है, जंगल की आग वृक्षों पर भारी है, चिता हिरण के झुण्ड पर भारी है, सिंह हाथी पर भारी है, प्रकाश अंधकार पर भारी है, ठीक उसी प्रकार शिवाजी महाराज शत्रुदल (मुगलवंश) पर भारी है।

2. दूसरा कवित का भावार्थ या सारांश लिखें |

उत्तर- इस कवित में वीभत्स रस का वर्णन है। जहाँ कवि भूषण महाराज छत्रसाल की तलवार की तेज का वर्णन करते हुए कहते हैं कि इस तलवार की तेज सूर्य के किरणों के समान है। जिस प्रकार सूर्य की किरण गहरे अंधकार का नाश करती है, ठीक उसी प्रकार ये तलवार नागिन के बिष के समान शत्रुओं के सिर धर से अलग करके कालि माता को कलेऊ चढ़ाती है।

3. छत्रसाल की तलवार कैसी है? वर्णन कीजिए। 2021,2024,

उत्तर - छत्रसाल की तलवार सूर्य के किरणों के समान है। जिस प्रकार सूर्य की किरणे गहन अंधकार को पल भर में नाश कर देती है। उसी प्रकार यह तलवार नागिन के विष के समान शत्रुओं को मौत के घाट उतार देती है। ऐसा लगता है मानों जैसे गर्दन काटकर माँ काली को भोजन दे रही है। अत: उनकी तलवार की धार बड़ी तीक्ष्ण है।

4. भूषण रीतिकाल की किस धारा के कवि है? वे अन्य रीतिकालीन कवियों से विशिष्ठ कैसे है? 2022

उत्तर - भूषण रीतिकाल की रीतिबद्ध काव्यधारा के कवि हैं। वे जातीय स्वाभिमान, आत्मगौरव, शौर्य एवं पराक्रम के कवि हैं। उन्होनें श्रृंगार रस की प्रधानता वाली रीति से हटकर वीर रस को प्रधानता दिये है। इस प्रकार कवि भूषण अन्य रीतिकालीन कवि से विशिष्ट कवि है।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न – 4 अंक

1. प्रतिभट कटक कटीले केते काटि- काटि, कालिका सी किल कि कलेऊ देति काल को। 2011,2022,2025

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति भूषण रचित 'कवित' शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि छत्रसाल की तलवार शत्रुओं की सेना को इस प्रकार काटती है कि वह काली की कलेऊ (भोजन) बनते जा रही है।

2. लागति लपकि कंठ बैरिन के नागिनि सी, रूद्रहि रिझावे दै दै मुंडन की माल को।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति भूषण रचित 'कवित' शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि छत्रसाल लपलपाती तेज तलवार शत्रु के गले में नागिन के समान लिपट जाती है और सिर धर से अलग कर देती है। यह माला(सांप) भगवान रूद्र को प्रसन्न करने के लिए गले में लिपटी रहती है।

लघु उत्तरीय प्रश्न – 2 अंक

1. शिवाजी की तुलना भूषण ने मृगराज से क्यों की है? [2013, 2021, 2022, 2024]

उत्तर- शिवाजी की तुलना भूषण ने मृगराज (सिंह) से इसलिए किये हैं, क्योंकि जिस प्रकार सिंह हाथी के मस्तक को फाड़कर खून पी जाता है, उसी प्रकार शिवाजी भी मुगलों का मस्तक फाड़ देते हैं।

2. शिवाजी की तुलना भूषण ने किन - किन से की है ? 2013,2022

उत्तर- कवि भूषण शिवाजी की तुलना इन्द्र, समुद्र की आग, राम, पवन, शिव, परशुराम, चीता, सिंह और कृष्ण से की है।

6. तुमुल कोलाहल कोलह में

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. "तुमुल कोलाहल कलह में" का भावार्थ या सारांश लिखें |

उत्तर - "तुमुल कोलाहल कलह में" शीर्षक कविता जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कामायनी महाकाव्य से ली गई है। इस कविता में श्रद्धा (नारी का हृदय) पुरुष के जीवन में शांति और स्नेह का प्रतीक है। कवि कहते हैं कि जब पुरुष दिनभर की

भाग-दौड़ और परेशानियों से थक जाता है, तब उसका मन और शरीर आराम चाहता है। ऐसी स्थिति में श्रद्धा उसे शांति और विश्राम देती है। जब जीवन दुख और अंधकार से घिरा होता है, तब श्रद्धा, सुबह की किरणों की तरह, मन को ताजगी और राहत देती है। जब मन आँसू और निराशा के बीच उदास हो, तब वह करुणा भरे कमल की तरह जीवन में फिर से सुख, आशा और प्रेम भर देती है। यानी नारी (श्रद्धा) पुरुष के जीवन में आनंद, सहारा और शक्ति का स्रोत है, जो कठिन समय में मन और हृदय को शांति, स्नेह और ताजगी देती है।

2. प्रसाद की काव्यगत विशेषताओं का वर्णन करें।

उत्तर:- जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रमुख कवि हैं और उनकी कविता में भारतीय संस्कृति की गहन भावनाएँ और सुंदर कल्पनाएँ स्पष्ट दिखाई देती हैं। वे दुखों से भरे जीवन को भी आँसू नहीं, बल्कि आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।
अपनी रचना 'कामायनी' में उन्होंने टूटे-बिखरे जीवन को दोबारा नए रूप में बनाने, आशा और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने का संदेश दिया है।

3. इस कविता का केन्द्रीय भाव क्या है?

उत्तर:- इस कविता का केन्द्रीय भाव यह है कि नारी पुरुष के जीवन में सहारा और शक्ति बनकर आती है। जब पुरुष जीवन की कठिनाइयों और परेशानियों से थक जाता है, तब नारी उसके दुखी और तपते मन को शीतलता और स्नेह देकर शांत करती है। इस कविता में 'श्रद्धा' पूरे नारी वर्ग का प्रतीक है। नारी पुरुष के जीवन में सुख, सौंदर्य, प्रेरणा और शक्ति के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. पवन की प्राचीर में रुक जल जीवन जा रहा झुका।

उत्तर :- प्रस्तुत पंक्ति जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित "तुमुल कोलाहल कलह में" शीर्षक कविता से लिया गया है।
इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि जिस तरह तेज हवा से टकराकर जल का प्रवाह रुक जाता है और झुक जाता है, ठीक उसी तरह जीवन भी कठिन परिस्थितियों में दब जाता है, लेकिन इन तकलीफों के बाद भी मनुष्य फिर से फूल की तरह खिलने की शक्ति पा लेता है।

2. चेतना थक-सी रही, तब मै मलय की बात रे मन।

उत्तर :- प्रस्तुत पंक्ति जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित "तुमुल कोलाहल में" शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि जब पुरुष दिनभर की भाग दौर में थक जाता है, तब मन की चंचलता के करण शरीर थककर आराम खोजता है तब व्यक्ति का हृदय ही उसको आराम देता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. हृदय की बात का क्या अर्थ है?

उत्तर:- हृदय की बात का अर्थ है मन की बात । हृदय में प्रेम, दया, ममता, कोमलता आदि का वास होता है। इन भावनाओं से युक्त बातों को हृदय की बात कहा गया है।

2. बरसात को सरस कहने का क्या तात्पर्य है?

उत्तर:- सरस बरसात का मतलब ऐसी झमाझम वर्षा से है जो धरती और पेड़ों-पौधों को ठंडक और ताजगी से भर देती है। इसी को सरस बरसात कहा जाता है।

3. सजल जलजात का क्या अर्थ है?

उत्तर:- सजल जलजात का अर्थ है- पानी में खिला हुआ ताजा, सुंदर और रस से भरा सुन्दर कमल का फूल। और वह इतना मनमोहक होता है कि भँवरे भी उसकी ओर आकर्षित हो जाते हैं।

4. कविता में उषा की किस भूमिका का उल्लेख है?

उत्तर:- कविता में उषा को प्रकाश रूप में देखा गया है, उषा दुख और अँधेरे के बीच सुख, उम्मीद और नई शुरुआत का प्रतीक बनकर आती है।

5. चातकी किसके लिए तरसती है?

उत्तर:- चातकी स्वाति नक्षत्र की एक छोटी सी बूंद के लिए तरसती है। अर्थात जल कण के लिए तरसती है।

6. जयशंकर प्रसाद किस काव्य-धारा के कवि माने जाते है ?

उत्तर :- जयशंकर प्रसाद छायावादी काव्य-धारा के कवि माने जाते है।

7. पुत्र वियोग

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पुत्र वियोग कविता का भावार्थ या सारांश लिखें | [2014, 2018, 2024]

उत्तर- "पुत्र वियोग" शीर्षक कविता सुभद्रा कुमारी चौहान के द्वारा रचित है। यह एक शोकगीत है जिसमें एक दुखी माँ अपने खोए हुए पुत्र को याद करती है। घर-परिवार में सब खुश हैं, पर उसके दिल में बहुत दर्द है, क्योंकि उसका सबसे प्यारा "खिलौना" (पुत्र) अब उसके पास नहीं है। वह अपने पुत्र को हमेशा अपनी गोद में रखती थी, उसे ठंड न लगे इसलिए उसकी देखभाल करती थी। जब भी बेटा "मा" कहकर

पुकारता तो वह तुरंत उसके पास पहुँच जाती थी उसके दुखी चेहरे को देखकर रात भर जगकर लोरियाँ गाती थी। बेटे की सलामती के लिए भगवान से दिन-रात प्रार्थना करती थी। दूध, नारियल, बताशे चढ़ायी पर फिर भी कोई चमत्कार नहीं हुआ और उसका प्यारा पुत्र मर गया। अब उसका मन हर समय पुत्र के लिए तड़पता है। उसे लगता है कि अगर एक बार भी बेटा वापस आ जाए तो वह उसे अपने सीने से लगा लेगी। अंत में वह कहती है शायद पिता और भाई-बहन तुम्हें भूल जाएँ, पर मैं कभी नहीं भूल सकती।

2. " पुत्र वियोग " शीर्षक कविता में पुत्र को 'छौना' कहने में क्या भाव छुपा है, उसे उद्घाटित करें। (2022)

उत्तर- माँ अपने बेटे को प्यार से छौना कहती हैं। जिस तरह हिरण हमेशा अपने शावक को खतरे से बचाता है। उसी तरह माँ का पूरा ध्यान अपने बेटे पर रहता है। माँ उसे ठंड न लगे, इसलिए उसे गोद से नहीं उतारती है। बेटा अगर 'माँ' कहता है, तो वह सब कुछ छोड़कर उसकी ओर दौड़ती है। इसलिए माँ अपने पुत्र को 'छौना' कहकर बुलाती है। यह शब्द माँ के ममता और प्यार को दर्शाता है।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. आज दिशाएँ भी हँसती हैं (2013, 2020)
   है उल्लास विश्व पर छाया,
   मेरा खोया हुआ खिलौना
   अब तक मेरे पास न आया।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियां सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता "पुत्र वियोग " से ली गई है। इस पंक्ति के माध्यम से कवयित्री का कहना है कि चारों ओर खुशी और उल्लास है। सब प्रसन्न हैं, किन्तु मेरा प्यारा "खिलौना " (पुत्र) अब तक मुझे नहीं मिला। अभी तक लौटकर मेरे पास नहीं आया।

2. भाई - बहिन भूल सकते हैं (2021, 2023)
   पिता भले ही तुम्हें भुलावे
   किंतु रात-दिन की साथिन माँ
   कैसे अपना मन समझावे !

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियां सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता "पुत्र वियोग " से ली गई है। इस पंक्ति के माध्यम से कवयित्री का कहना है कि भाई, बहन और पिता शायद तुम्हें भूला सकते हैं, पर दिन-रात साथ रहनेवाली माँ तुम्हें कभी नहीं भूल सकती है।

3. फिर भी रोता ही रहता है (2015, 2016, 2021)
   नहीं मानता है मन मेरा
   बड़ा जटिल नीरस लगता है
   सूना-सूना जीवन मेरा ।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियां सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता "पुत्र वियोग " से ली गई है। इस पंक्ति के माध्यम से कवयित्री का कहना है कि पुत्र की मृत्यु के बाद भी मेरा मन मानता नहीं और वियोग में रोता ही रहता है। अब जीवन बड़ा कठिन, नीरस और सूना-सा लगने लगा है।

4. थपकी दे दे जिसे सुलाया, (2019, 2024)
   जिसके लिए लोरियाँ गाईं,
   जिसके मुख पर जरा मलिनता
   देख आँख में रात बिताई।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियां सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता "पुत्र वियोग" से ली गई है। इस पंक्ति के माध्यम से कवयित्री का कहना है कि मैंने अपने पुत्र को थपकी देकर सुलाया, उसके लिए लोरियाँ गाईं। उसके चेहरे पर जरा सी उदासी देखकर मैंने पूरी रात जागकर गुजारी।.

5. शीत न लग जाए, इस भय से (2019)
   नहीं गोद से जिसे उतारा,
   छोड़ काम दौड़ कर आई
   'मा' कहकर जिस समय पुकारा।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियां सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता "पुत्र वियोग " से ली गई है। इस पंक्ति के माध्यम से कवयित्री का कहना है कि वह अपने पुत्र को हमेशा अपनी गोद में रखती थी कि कहीं ठंड न लग जाए। जब भी वह "मां" कहकर पुकारता, मैं काम छोड़कर दौड़ पड़ती थी।

6. बड़ा कठिन है बेटा खोकर (2014)
   माँ को अपना मन समझाना ।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियां सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता "पुत्र वियोग " से ली गई है। इस पंक्ति के माध्यम से कवयित्री का कहना है कि मां मन ही मन बेटे से कहती है अब मुझे इस तरह छोड़कर कभी मत जाना। तुम्हें खोकर अपने मन को समझाना बहुत कठिन है।

7. तड़प रहे हैं विकल प्राण ये (2024).
   मुझको पल भर शांति नहीं है
   वह खोया धन पा न सकूँगी
   इसमें कुछ भी भ्रांति नहीं है।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियां सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता "पुत्र वियोग " से ली गई है। इस पंक्ति के माध्यम से कवयित्री का कहना है कि मेरा मन और प्राण तड़प रहा हैं। मुझे ज़रा

भी चैन नहीं है। मैं जानती हूँ कि मेरा खोया हुआ अमूल्य रत्न (बेटा) मुझे कभी वापस नहीं मिलेगा।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. माँ के लिए अपना मन समझाना कब कठिन है और क्यों ? (2020, 2023)

उत्तर- माँ बेटे के बिना जी नहीं सकती। बेटा खोने के बाद माँ अपने दिल को समझा नहीं पाती। वह बेटे को दुलार करके कहती है कि मुझे छोड़कर कभी न जाना।

2. पुत्र को छौना कहने में क्या भाव छिपा है ? उद्घाटित करें (2012, 2013)

उत्तर- माँ का बच्चा हिरण के शावक जैसा कोमल होता है। माँ को उसके लिए अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं। अतः माँ उसे 'छौना' कहकर अपार स्नेह जताती है।

3. पुत्र के लिए माँ क्या - क्या करती हैं? 'पुत्र वियोग' शीर्षक कविता के आधार पर उत्तर दें। (2022)

उत्तर- माँ अपने पुत्र के लिए बहुत कुछ करती है- पुत्र को ठंड से बचाती है, बेटे के बुलाते ही दौड़ जाती है, थपकी देकर, लोरियाँ गाकर सुलाती है। उसकी सलामती के लिए देवताओं पर नारियल, दूध और बताशे आदि चढ़ाती है।

4. कवयित्री का 'खिलौना' क्या हैं? (2024)

उत्तर- कवयित्री का "खिलौना" उसका पुत्र है जो खो गया है। उसके वियोग में माँ तड़पती रहती है।

5. 'पुत्र वियोग' शीर्षक कविता में कवयित्री स्वयं को असहाय और विवश क्यों कहती है? (2025)

उत्तर - पुत्र वियोग कविता में माँ अपने बेटे की पूरी तरह देखभाल की, उसे ठंड और बीमारी से बचायी, परंतु इन सब कोशिशों के बावजूद वह अपने पुत्र को न बचा सकी। अतः स्वयं असहाय और विवश रह गई ।

8. उषा

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. उषा पाठ का भावार्थ या सारांश लिखें | [2018]

उत्तर - 'उषा' शीर्षक कविता शमशेर बहादूर सिंह के द्वारा रचित है। जिसमे कवि बताते हैं कि सुबह होने से पहले का समय बहुत शांत और सुंदर होता है। इस समय आकाश बिल्कुल साफ और नीला दिखाई देता है, जैसे शंख को धोकर चमका दिया गया हो। ऐसा लगता है जैसे किसी ने रसोई के चौके को राख से लीप दिया हो। थोड़ी देर बाद पूरब दिशा में हल्का लाल रंग फैलने लगता है। तब आकाश ऐसा लगता है जैसे काली सिल पर लाल केसर घिस दी गई हो या स्लेट पर किसी ने लाल चाक रगड़ दी हो। यह दृश्य बहुत मनमोहक होता है। नीले आकाश को देखकर ऐसा लगता है जैसे नीले पानी में किसी का गोरा और चमकता शरीर लहरों के साथ हिल रहा हो। लेकिन यह सुंदरता ज्यादा देर तक नहीं रहती, सूर्योदय होते ही उषा का यह जादुई रूप समाप्त हो जाता है।

2. उषा शीर्षक कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए। (2011,2014,2021)

उत्तर- उषा शीर्षक कविता शमशेर बहादुर सिंह के द्वारा रचित हैं। कवि इस कविता में भोर होने से पहले के समय का बहुत ही सुंदर चित्रण कियें हैं, जिसे उषाकाल (सुबह) भी कहते हैं। इस कविता का केन्द्रीय भाव उषा की सुंदरता है। सूर्योदय के पहले आकाश बहुत नीला और शंख के समान साफ दिखता है, फिर उसमें लालिमा फैल जाती है जो बहुत मनोहर लगती है। यह दृश्य ऐसा प्रतीत होता है जैसे रसोईघर राख से लीपा हो, सिल पर केसर घिसा हो या स्लेट पर लाल खड़िया चाक रगड़ा हो। लेकिन यह जादुई रूप सूर्योदय तक ही रहता है, उसके बाद बदल जाता है।

3. 'उषा' शीर्षक कविता में 'राख से लीपा हुआ चौका' के द्वारा कवि ने क्या कहना चाहा है? (2022)

उत्तर- कवि ने आकाश की सुंदरता को बहुत ही सरल और घरेलू ढंग से व्यक्त कियें है। कवि कहते है जैसे घर में प्रातःकाल स्त्रियाँ रसोईघर को गोबर या राख से लीपकर शुद्ध और पवित्र बनाती हैं, वैसे ही प्रातःकाल का आकाश भी बिल्कुल साफ और शुद्ध दिखाई देता है। सुबह-सुबह आकाश का रंग कुछ नीला और हल्का-सा धुँधला होता है। यह नीला आकाश राख से लीपे गए चौके (रसोईघर) जैसा प्रतीत होता है।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. "जादू टूटता है इस उषा का अब सूर्योदय हो रहा है।" (2014, 2017, 2020)

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति शमशेर बहादुर सिंह द्वारा रचित उषा शीर्षक कविता से ली गई हैं। इस पंक्ति के माध्यम से कवि बिम्बों के सहारे उषाकाल के आकाश की सुंदरता का वर्णन कियें है। नीले और लाल रंगों से भरा आकाश बहुत सुंदर लगता है, पर सूरज निकलते ही यह सौंदर्य मिट जाता है।

2. "बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो।" (2022)

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति शमशेर बहादुर सिंह द्वारा रचित उषा शीर्षक कविता से ली गई है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि जैसे काली सिल पर केसर की लालिमा चमकती है, वैसे ही प्रातःकाल का आकाश लालिमा से भरा सुंदर दिखाई देता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रात: काल का नभ कैसा है? [2011, 2015, 2016, 2017, 2020, 2024]

उत्तर- प्रातः काल का नभ निले शंख के समान चमकीला और पवित्र है।

2. उषा का जादू कैसा है? [2015, 2016, 2017, 2023]

उत्तर- उषा का जादू बहुत मनमोहक है। उसके कारण आकाश कभी नीले शंख जैसा, कभी राख से लीपा रसोईघर जैसा और कभी काली सिल पर लाल केसर के जैसा दिखाई देता है। ऐसी सुंदरता केवल सूर्योदय के पहले ही देखने को मिलता है।

3. 'उषा' कविता में कवि को सुबह का आकाश कैसा दिखता है? (2018)

उत्तर- उषा कविता में कवि को सुबह का आकाश कभी नीले शंख जैसा, कभी राख से लीपा रसोईघर जैसा और कभी काली सिल पर लाल केसर के जैसा दिखाई देता है। ऐसी सुंदरता केवल सूर्योदय के पहले ही देखने को मिलता है।

4. 'लाल केसर और लाल खड़िया चाक' किसके लिए प्रयुक्त है? [2020, 2024]

उत्तर- कवि शमशेर बहादुर सिंह ने 'लाल केसर' और 'लाल खड़िया चाक' का प्रयोग सुबह के आकाश की लालिमा दिखाने के लिए किया है।

5. नील जल में किसकी गौर देह हिल रही है? उषा शीर्षक कविता के आधार पर उत्तर दें?[2022, 2025]

उत्तर- नीले जल में झिलमिलाती गौर देह सूर्य का प्रतीक है। जब सूर्य की सुनहरी किरने जल के सतह पर पड़ती तो ऐसा लगता हैं जैसे कोई गोरा देह हिल रही हो।

6. 'राख से लीपा हुआ चौका' के द्वारा कवि ने क्या कहना चाहा है? (2022)

उत्तर- कवि कहना चाहते हैं कि प्रातःकाल का नीला और चमकता आकाश ऐसा लगता है "जैसे राख से लीपा हुआ चौका हो" जो अभी भी गीला और चमकदार है।

7. प्रातः काल के नभ की तुलना बहुत नीला शंख से क्यों की गई है।

उत्तर- कवि शमशेर बहादुर सिंह ने प्रातः काल के नभ की तुलना बहुत निला शंख से इसलिए किये हैं क्योंकि, जिस प्रकार शंख की ध्वनी बहुत पवित्र और मनमोहक होती है, ठीक उसी प्रकार प्रातःकाल का आकाश भी बहुत नीला और शांत होती है। जो सबके मन को हर लेती है।

9. जन जन का एक चेहरा

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:

1. "जन जन का चेहरा एक" कविता का भावार्थ या सारांश लिखें | [2018]

उत्तर- "जन जन का चेहरा एक" शीर्षक कविता गजानन माधव मुक्तिबोध के द्वारा रचित है। यह एक प्रायः लम्बी कविता है। इस कविता में कवि बताते हैं कि दुनिया में चाहे लोग एशिया, यूरोप या अमेरिका में रहता हो, लेकिन मनुष्य और उसकी भावनाएँ हर जगह एक जैसी होती हैं। सबका चेहरा, सुख-दुख, प्यार, गुस्सा और संघर्ष एक समान है। धूप, प्रकृति और जीवन का प्रवाह भी हर जगह एक समान ही है। जब ये लोग अन्याय के खिलाफ लड़ते हैं तो उनका लक्ष्य भी एक जैसा हो जाता है। पूरी दुनिया की जनता शोषण और अत्याचार से परेशान है। शत्रु और शोषक हर जगह एक जैसे हैं, जो अंधकार फैलाते हैं। लेकिन जैसे सुबह की लाल किरणें अंधेरे को दूर करती हैं, वैसे ही सच्चे मित्र, सत्य और क्रांति लोगों को उम्मीद और रोशनी देते हैं। पूरी पृथ्वी पर लोगों की पीड़ा, साहस और संघर्ष एक समान है। इस प्रकार कवि यह संदेश देते हैं कि पूरी दुनिया के लोग आपस में भाई-बहन हैं, सबका जीवन, संघर्ष और आशा एक ही है, और अंत में जीत और खुशी भी सभी के लिए एक समान है।

2. 'जन-जन का चेहरा एक' कविता का केन्द्रीय विषय क्या है? 2018)

उत्तर- मुक्तिबोध की यह कविता आम जनता के संघर्ष और मेहनत को दिखाती है। दुनिया के अलग-अलग देशों में लोग अपने अधिकार, न्याय, शांति और भाईचारे के लिए संघर्ष करते हैं। कवि मानते है कि इन सबका दर्द और सपना एक जैसा है। इसलिए पूरी जनता का चेहरा एक जैसी ही दिखाई देता है।

3. नदियों की वेदना का क्या कारण है? स्पष्ट करें। (2023)

उत्तर- कवि मुक्तिबोध ने नदियों की बहती धारा को मनुष्य के जीवन से जोड़ा है। गंगा, इरावती, नील, आमेजन जैसी नदियाँ बहते समय दर्द और कराह जैसी ध्वनि करती हैं। यह उनकी वेदना है। जैसे नदियाँ रुकावटों से टकराकर भी आगे बढ़ती रहती हैं, वैसे ही इंसान भी दुख और कठिनाइयों के बीच संघर्ष

करता रहता है। नदियों की वेदना असल में मानव जीवन की वेदना है।

4. मुक्तिबोध की रचना 'जन-जन का चेहरा एक' का सारांश लिखें। (2018)

उत्तर- गजानन माधव मुक्तिबोध की कविता 'जन-जन का चेहरा एक' में कवि ने बताया है कि दुनिया के सभी लोग मूल रूप से एक जैसे हैं। चाहे एशिया, यूरोप या अमेरिका का मनुष्य हो, सबकी पीड़ा, संघर्ष, क्रोध और सपने एक जैसे हैं। नदियों की वेदना, जनता का संघर्ष और शोषकों का चेहरा सब जगह एक समान है। कवि का संदेश है कि पूरी मानवता एक है और सबको मिलकर न्याय और क्रांति की ओर बढ़ना चाहिए।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. दुनिया के हिस्सों में चारों ओर जन-जन का युद्ध एक।' (2012, 2013)

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति मुक्तिबोध की कविता "जन-जन का चेहरा एक" से ली गई हैं। इस पंक्ति के माध्यम कवि का कहना है कि, पूरी दुनिया में बुरे लोग और शोषक हावी हैं जो आम जनता पर अन्याय और अत्याचार करते हैं। इन शोषक के खिलाफ आम जनता की आवाज भी हर जगह एक जैसी है, जो अन्याय के खिलाफ लड़ रही है।

2. आशामयी लाल-लाल किरणों से अंधकार चीरता सा मित्र का स्वर्ग एक; जन-जन का मित्र एक

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति मुक्तिबोध की कविता "जन-जन का चेहरा एक" से ली गई हैं। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि, आजादी मिलने के बाद भी आम जनता की स्थिति नहीं सुधरी है। वे आर्थिक और सामाजिक रूप से परेशान हैं। स्वतंत्रता का फायदा केवल कुछ लोगों को मिला है, इसलिए जनता की उम्मीदें टूट गई है।

3. एशिया के, यूरोप के अमरीका के भिन्न-भिन्न वास स्थान; भौगोलिक, ऐतिहासिक बंधनों के बावजूद, सभी ओर हिंदुस्तान, सभी ओर हिंदुस्तान ।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियाँ मुक्तिबोध की कविता "जन-जन का चेहरा एक " से ली गई हैं। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना हैं कि,एशिया, यूरोप और अमेरिका जैसे महाद्वीपों में रहने वाले लोगों की भौगोलिक दूरी और ऐतिहासिक परिस्थितियाँ भले ही अलग हों, फिर भी हर जगह हिंदुस्तान की संस्कृति, भावना और प्रभाव दिखाई देता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न:

1. मुक्तिबोध किस परीक्षा में असफल हुए थे? (2015)

उत्तर- मुक्तिबोध 1937 ई. में बी.ए. की परीक्षा में असफल हुए थे।

2. कवि के अनुसार कहाँ-कहाँ की धूप एक जैसी होती है? (2015, 2019)

उत्तर- कवि मुक्तिबोध के अनुसार एशिया, यूरोप और अमेरिका की गलियों की धूप एक जैसी होती है।

3. 'जन-जन का चेहरा एक' से कवि का क्या तात्पर्य है? (2012, 2013)

उत्तर- जन-जन का चेहरा एक' से कवि का तात्पर्य यह है कि, एशिया, यूरोप, अमेरिका आदि देशों के लोगों की पीड़ा और संघर्ष एक जैसे हैं।

4. कवि मुक्तिबोध ने सितारे को भयानक क्यों कहा है? (2020, 2023)

उत्तर- कवि मुक्तिबोध ने सितारे को भयानक इसलिए कहा क्योंकि वह पूँजीपतियों का नाश और समाजवादियों की जीत का संकेत देता है।

5. दानव दुरात्मा से क्या अभिप्राय है? (2015, 2016)

उत्तर- दानव दुरात्मा का अभिप्राय ऐसे लोगों से है, जो लालची और निर्दयी हैं। पूँजीपति इन दानवों की तरह ही हैं, जिनमें दया नहीं होती है।

6. मुक्तिबोध की कविताओं की क्या पहचान है? (2019)

उत्तर- मुक्तिबोध की कविताएँ प्रगतिशील और समाजवादी विचारों वाली होती हैं। वे आम जनता और मजदूरों के संघर्ष की बात करते हैं।

7. समूची दुनिया में जन-जन का युद्ध क्यों चल रहा है? (2022)

उत्तर- समूची दुनिया में जन-जन का युद्ध इसलिए चल रहा है क्योंकि शोषकों के खिलाफ लोग लड़ रहे हैं और एक दिन आम जनता की जीत जरुर होगी।

8. 'जन-जन का चेहरा एक' शीर्षक कविता में, प्यार का इशारा और क्रोध का दुधारा से क्या तात्पर्य है? (2025)

उत्तर- इस कविता में प्यार का इशारा का मतलब है कि लोगों में ममता और करूणा आज भी जिन्दा है। तथा क्रोध का दुधारा का मतलब है कि, लोग अत्याचार के खिलाफ आज भी संघर्ष कर रहें है।

9. बंधी हुई मुट्ठियों का क्या लक्ष्य है?

उत्तर- बंधी हुई मुट्ठी एकता और संगठन की शक्ति का प्रतीक है। जब लोग मिलकर संघर्ष करते हैं, तो बड़े से बड़ा शत्रु भी

हार जाता है। बंधी मुट्ठी जनता की ताकत, संकल्प और साहस को दिखाती है।

10. ज्वाला कहाँ से उठती है? कवि ने उसे 'अतिकुद्ध' क्यों कहा है?

उत्तर- ज्वाला आम जनता के भीतर से उठती है। कवि ने इसे अतिकुद्ध इसलिए कहा है, क्योंकि यह ज्वाला गुस्से में सभी अत्याचारियों को नष्ट कर देती है।

11. पृथ्वी के प्रसार को किन लोगों ने अपनी सेनाओं से गिरफ्तार कर रखा है?

उत्तर- पृथ्वी के प्रसार को पूँजीपतियों ने गिरफ्तार कर रखा है। उन्होंने उद्योग और व्यापार के जरिए आम जनता की आशाएँ और स्वतंत्रता छीन ली हैं।

10. अधिनायक

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. "अधिनायक" कविता का भावार्थ या सारांश लिखें | [2019,2023]

उत्तर - "अधिनायक" शीर्षक कविता रघुवीर सहाय के द्वारा रचित है। जिसे आत्म हत्या के विरुद्ध कविता संग्रह से लिया गया है। इस कविता में कवि पूछते हैं कि हमारे राष्ट्रगीत में जिस "भारत-भाग्य-विधाता" की बात की जाती है, वह असल में कौन है? क्या वह गरीब आदमी है, जो फटा वस्त्र पहनकर राष्ट्रगीत गाता है। या फिर नेता है, जो मखमल के वस्त्र पहने 'रथ' पर बैठकर अपनी जय-जय कार कराता है। आखिरकार वह "जन-गण-मन अधिनायक" कौन है? क्या वह पूरब-पश्चिम दिशा से आया हुआ आम गरीब जनता है। या फिर हम जिसका मजबूरी में गुणगान गाते हैं, जो हमारा शोषण करता है वही महानायक है। जो गरीबों को दबाता हैं।

2. 'अधिनायक' शीर्षक कविता का केंद्रीय विषय क्या है? [2018]

उत्तर- इस कविता का केंद्रीय विषय है - आज के नेताओं की तानाशाही और आम जनता की मजबूरी। नेता खुद को महान दिखाते हैं, अपनी प्रसंशा करवाते हैं और अंदर ही अंदर आम जनता का शोषण करते हैं। जिससे आम जनता की गरीबी कभी समाप्त नहीं होती है।

3. भारत के राष्ट्रगीत 'जन-गण-मन अधिनायक जय है' से इस कविता का क्या संबंध है? [2020]

उत्तर- 'जन-गण-मन' एक राष्ट्रगान है, जिसमें देश की महानता का गुणगान है। लेकिन इस कविता में 'अधिनायक' शब्द का प्रयोग नेताओं की दबंगई पर व्यंग्य करने के लिए किया गया है। आज के नेता तानाशाह जैसे बन गए हैं। और जनता सिर्फ मजबूरी में उनका गुणगान गाती है।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. पूरब-पश्चिम से आते हैं, नंगे भूखे नरकंकाल सिंहासन पर बैठा उनके तमगे कौन लगाता है। [2020,2022]

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति रघुवीर सहाय के द्वारा रचित 'अधिनायक' शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि, देश के हर कोने से भूखे-प्यासे, असहाय और गरीब लोग आते हैं। फिर भी वे लोग नेताओं का सम्मान करते हैं, जबकि असल में वे खुद मदद के लायक होते हैं।

2. 'राष्ट्रगीत में भला कौन वह भारत भाग्य विधाता है फटा सुथन्ना पहने जिसका गुन हरचरना गाता है। [2018]

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति रघुवीर सहाय के द्वारा रचित 'अधिनायक' शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि, राष्ट्रगीत में जिसकी जय-जय कार होती है, वह असल में कौन है? क्या वह आम आदमी है, जो फटे कपड़े पहनता है और राष्ट्रगीत गाता है? यह व्यंग्य उन नेताओं पर जो सिर्फ दिखावा करते हैं, लेकिन गरीबों की मदद नहीं।

3. 'फटा सुथन्ना पहने जिसका, गुन हरचरना गाता है। [2017]

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति रघुवीर सहाय के द्वारा रचित 'अधिनायक' शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि, हरचरना नाम का एक गरीब बच्चा फटे कपड़े पहनकर राष्ट्रगीत गा रहा है, पर उसे यह समझ नहीं कि वे किसकी प्रशंसा कर रहा है। आम जनता आज भी नेताओं के दबाव में हैं।

4. मखमल टमटम बल्लम तुरही पगड़ी छत्र चँवर के साथ तोप छुड़ाकर ढोल बजाकर जय-जय कौन कराता है। [2011]

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति रघुवीर सहाय के द्वारा रचित 'अधिनायक' शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि, वे मखमल के कपड़े पहनते हैं, रथों पर चलते हैं, बाजे बजते हैं, और उनका खूब सम्मान होता है। लेकिन वे असली भारत भाग्य विधाता नहीं हैं, बल्कि सत्ता और शोहरत के भूखे हैं। इसी के वजह से आम जनता और भी गरीब होते जा रहा है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अधिनायक कौन है? या अधिनायक का क्या अर्थ है? [2014, 2021]

उत्तर- अधिनायक का अर्थ है - नेता या शासक। आज के समय में अधिनायक बेईमान और दबंग नेता को कहा जाता हैं। जो देश पर राज कर रहे हैं और जनता की गरीबी बढ़ा रहे हैं।

2. हरचरना कौन है? उसकी क्या पहचान है? [2020 , 2021]

उत्तर- हरचरना एक आम जनता का प्रतिक है। वह गरीब है, फटे कपड़े पहनता है और नेताओं की तारीफ करता है, भले ही उसकी हालत बुरी हो।

3. राष्ट्रीय पर्व पर किसका गुणगान किया जाता है? [2019]

उत्तर- राष्ट्रीय पर्व पर नेताओं और देश के भाग्य-विधाताओं का गुणगान किया जाता है, पर वह जनता का असली नायक नहीं हैं।

4. हरिचरण को हरिचरना क्यों कहा गया है? [2014, 2018]

उत्तर- हरिचरण को हरिचरना इसलिए कहा गया है ताकि कविता में मिठास और सरलता आए। हरिचरना आम जनता का प्रतीक है।

5. उत्सव कौन और क्यों मना रहे हैं? 'अधिनायक' शीर्षक कविता के आधार पर बताइये। [2021]

उत्तर- हरचरना (आम आदमी) उत्सव मना रहा है। यह राष्ट्रीय पर्व है, लेकिन उसे असली मतलब नहीं पता। वह डर और दबाव में आकर, मजबूरी में यह उत्सव मना रहा है और राष्ट्रगान गा रहा है।

6. 'डरा हुआ मन बेमन जिसका बाजा रोज बजाता है।' यहाँ 'बेमन' का क्या अर्थ है ? [2021]

उत्तर- यहाँ 'बेमन' शब्द का अर्थ है मतलब है मजबूरी में या बिना इच्छा के। लोग डरकर नेता की तारीफ करते हैं, पर उनका मन उसमें नहीं होता।

11. प्यारे नन्हें बेटे को

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. "प्यारे नन्हें बेटे को" कविता का भावार्थ या सारांश लिखें | [2018]

उत्तर - "प्यारे नन्हें बेटे को" शीर्षक कविता विनोद कुमार शुक्ल के द्वारा रचित है। इस कविता में कवि अपने छोटे बेटे को जीवन की सच्चाई और मेहनत का महत्व समझाना चाहता है। कविता में लोहा सिर्फ धातु नहीं है, बल्कि मेहनत, मजबूती और सच्चाई का प्रतीक है। कवि अपने परिवार के साथ मिलकर जीवन की छोटी-छोटी चीजों (चिमटा,करकुल, कील, आदि) में मेहनत को खोजता है, ताकि उसका बेटा मेहनत की कीमत समझ सके, अच्छे संस्कार सीख सके और आगे चलकर एक सच्चा और मेहनती इंसान बन सके |

कविता के अंत में कवि कहते हैं कि जो आदमी अपने बेटे को कंधे पर बिठाकर घूमता है, अपनी बेटी के लिए दूल्हा ढूंढता है और मेहनत से जीवन यापन करता है, वही असली 'लोहा' है। अंततः यह कविता बच्चों को जीवन की सच्चाई, मेहनत का मोल और जीवन में मजबूत (लोहे जैसा) बनने की प्रेरणा देती है।

2. लोहा क्या है? इसकी खोज क्यों की जा रही है? [2019]

उत्तर- लोहा एक मजबूत और काम आने वाली धातु है। इसका उपयोग घर, खेत और मशीनों में बहुत होता है। लोहा शक्ति और मेहनत का प्रतीक है। कवि इसकी खोज इसलिए हो रही हैं ताकि लोगों को इसकी ताकत और जरूरत समझ में आ सके।

3. प्यारे नन्हें बेटे को' शीर्षक कविता में कवि लोहे की पहचान किस रूप में कराते हैं? यही पहचान उनकी पत्नी किस रूप में कराती है? [2022]

उत्तर- इस कविता में कवि लोहे की पहचान मेहनत से जुड़ी चीजों से कराते हैं। जैसे- फावड़ा, कुदाली, खुरपी, बैलगाड़ी का पहिया आदि सब में लोहा है।

कवि की पत्नी घर की चीजों में लोहा पहचाना समझाती हैं, जैसे चिमटा, करछुल, साइकिल, सैफ्टी पिन, बाल्टी, छाते की कमानी, हँसिया आदि सब में लोहा है।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1.कि हर वो आदमी जो मेहनतकश लोहा है हर वो औरत दबी सताई बोझ उठाने वाली, लोहा।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति विनोद कुमार शुक्ल के द्वारा रचित "प्यारे नन्हें बेटे को" शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि कहना है कि, जो आदमी मेहनत करता है, जो औरत दुख सहती है, बोझ उठाती है। वे दोनों लोहा के समान मजबूत हैं। उनका जीवन कठिनाइयों से दबा हुआ है, फिर भी वे झुकते नहीं इसीलिए उन्हें 'लोहा' कहा गया है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बिटिया से क्या सवाल किया गया है? 'प्यारे नन्हें बेटे को' शीर्षक कविता के आधार पर स्पष्ट करें। [2021]

उत्तर- बिटिया से पूछा गया है कि लोहा कहाँ-कहाँ मिलता है। तब बिटिया बोली चिमटा, करछुल, सिगड़ी, साइकिल, फावड़ा, बैल की घंटी आदि सब में लोहा है।

2. बिटिया कहाँ-कहाँ लोहा पहचान पाती है? [2023]

उत्तर- बिटिया चिमटा, करछुल, सिगड़ी, साइकिल और खेती के औजारों में लोहा पहचानती है।

3. मेहनतकश आदमी और बोझ उठाने वाली औरत में लोहे की खोज का क्या अर्थ है?

उत्तर- मेहनतकश आदमी और बोझ उठाने वाली औरत में लोहे की खोज का अर्थ है- कि जिस प्रकार लोहा मजबूत होता है, वैसे ही मेहनत करने वाला आदमी और औरत मजबूत होती हैं। वह सभी कष्ट सहती है। इसी हिम्मत को कवि "लोहा" कहते हैं।

4. पिता 'सिखलाते' हैं और माँ 'समझाती' है। क्यों? "प्यारे नन्हें बेटे को" शीर्षक कविता के आधार पर उत्तर दें।

उत्तर- पिता जिन औजारों की बात करते हैं, वे बिटिया के लिए नए हैं, इसलिए उन्हें सिखाना पड़ता है। पर माँ जिन चीजों की बाते करती है, वे बिटिया पहले से जानती है, इसलिए माँ समझाती है।

12. हार – जीत

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. "हार-जीत" कविता का भावार्थ या सारांश लिखें |[2015, 16, 17, 23]

उत्तर- "हार-जीत" शीर्षक कविता अशोक वाजपेयी के द्वारा रचित एक गद्य कविता है जो युद्ध, सत्ता और जनता के बीच के सच और भ्रम को दिखाती है। कविता में जनता विजय उत्सव मना रही है, लेकिन उन्हें सच्चाई नहीं पता है कि युद्ध किससे हुआ, क्यों हुआ, युद्ध में विजय हुई या नहीं हुई। एक बूढ़ा मशकवाला जो रोड को सींचता है और कहता है - "हम फिर हार गए" लेकिन कोई उसकी बात पर ध्यान नहीं देता है। उसे सच कहने का हक भी नहीं है। और जिन्हें सच कहने का हक है। वें सच बताते ही नहीं है। बल्कि जनता को गुमराह करके झूठा उत्सव मना रहे हैं। इस कविता में जनता को सच से दूर रखा जाता है और उन्हें झूठी जीत का एहसास दिलाया जाता है।

2. गद्य कविता क्या है? इसकी क्या विशेषताएँ हैं? 'हार-जीत' कविता के आधार पर समझाइए। [2021]

उत्तर- गद्य कविता एक ऐसी कविता है जो छंद के बिना सामान्य बोलचाल की भाषा में लिखी जाती है, लेकिन इसमें भाव बहुत गहरा होता है।

■ गद्य कविता की निम्न विशेषताएं हैं-

1. यह बातचीत जैसी भाषा में होती है।
2. इसमें गहरें भाव होती हैं।
3. इसकी भाषा बहुत आसान होती है।
4. यह आम आदमी, राजनीति, युद्ध और समाज से जुड़े सवाल उठाती है।
5. यह दिखावे को नहीं सच को बताती है।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. नागरिकों को नहीं पता कि कितने सैनिक गए थे और कितने विजयी वापस आ रहे हैं। शेष रहने वालों की सूची अप्रकाशित है।" - सप्रसंग व्याख्या कीजिए। [2013]

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति अशोक वाजपेयी के द्वारा रचित हार-जीत शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि, जनता को युद्ध की असली सच्चाई नहीं बताई गई है। कि युद्ध में कितने सैनिक भेजे गए और कितने मारे गए। उनकी कोई सूची जारी नहीं की गई। शासक सिर्फ विजय उत्सव मना रहा है, लेकिन जनता को केवल झूठा तसल्ली दे रहा है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'हार-जीत' कविता में मशक वाले की क्या भूमिका है? [2018]

उत्तर- बूढ़ा मशकवाला सड़कों पर पानी छिड़कने का काम करता है। वह सच बोल सकता है, पर उसकी बातों पर कोई भरोसा नहीं करता। उसे सच बताने का अधिकार नहीं था।

2. कवि अशोक वाजपेयी का परिचय दें। [2019]

उत्तर- अशोक वाजपेयी आधुनिक हिंदी के प्रसिद्ध कवि, आलोचक, विचारक और कला प्रेमी हैं। उन्होंने कई कविता संग्रह लिखे हैं, जैसे - 'शहर अब भी संभावना है', 'एक पतंग अनन्त में', 'हार-जीत' आदि।

3. बूढ़ा मशकवाला किस जिम्मेवारी से मुक्त है? सोचिए अगर जिम्मेवारी मिलती तो क्या होता? [2020]

उत्तर- बूढ़ा मशकवाला सच बताने की जिम्मेदारी से मुक्त है। अगर उसे यह जिम्मेदारी मिलती, तो वह जनता को बता देता कि देश युद्ध में हार गया है, जिससे लोग नाराज हो जाते।

4. उत्सव कौन और क्यों मना रहे हैं? [2020]

उत्तर- देश के नागरिक उत्सव मना रहे हैं। उन्हें लगता हैं कि राजा और सेना युद्ध जीतकर लौटे हैं, इसलिए वे उत्सव मना रहे हैं, पर उन्हें सच्चाई पता नहीं है।

5. नागरिक क्यों व्यस्त हैं? क्या उनकी व्यस्तता जायज है? [2021, 2023]

उत्तर- नागरिक विजय उत्सव की तैयारियों में व्यस्त हैं। वे नहीं जानते हैं कि, युद्ध क्यों और किससे हुआ था। उनकी व्यस्तता सही नहीं है, क्योंकि वे बिना सच्चाई जाने राजा की बातों पर भरोसा कर रहे हैं।

6. 'हार-जीत' कविता का केंद्रीय भाव क्या है? [2018]

उत्तर- हार-जीत कविता अशोक वाजपेयी द्वारा रचित है। इस कविता का केन्द्रीय भाव यह है कि जनता को सच जानने का हक है। युद्ध में हार हो या जीत - सच बताना चाहिए।

7. 'उत्सव' का क्या तात्पर्य है? [2015]

उत्तर- उत्सव शब्द का अर्थ है- खुशी का माहौल बनाकर आनंद उठाना। कविता में राजा विजय का उत्सव मना रहा है, पर सच क्या है, जनता को नहीं बता रहा है।

8. सड़कों को क्यों सींचा जा रहा है? [2015 , 2023]

उत्तर- विजय जुलूस के लिए सड़कों को साफ किया जा रहा है ताकि धूल न उड़े, खासकर राजा पर। यह सब दिखावे के लिए हो रहा है।

9. 'किसकी विजय हुई - सेना की या नागरिकों की?' कवि ने यह प्रश्न क्यों खड़ा किया है? आप क्या सोचते हैं?

उत्तर- कवि यह प्रश्न इसलिए पूछते हैं क्योंकि लड़ाई लड़ती है सेना, लेकिन जीत का श्रेय शासक लेता है। जनता को लगता है कि वह जीत गई, लेकिन असली फायदा सत्तापक्ष को होता है। यह विजय दिखने में तो देश की है, पर असल में शासक की जीत है।

10. 'खेत रहने वालों की सूची अप्रकाशित है।' इस पंक्ति के द्वारा कवि क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर- इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि मरे हुए सैनिकों और नागरिकों की लिस्ट नहीं बताई गई है। सरकार नहीं चाहती कि लोग जानें कि कितनी जानें गईं, ताकि कोई प्रश्न न उठे।

11. बूढ़ा मशकवाला क्या कहता है और क्यों कहता है?

उत्तर- बूढ़ा मशकवाला कहता है "हम एक बार फिर हार गए हैं, जीत नहीं हार लौट रही है।" वह ऐसा इसलिए कहता है क्योंकि वह सच्च जानता है। लेकिन उसकी बात को कोई नहीं मानता है।

13. गाँव का घर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. "गाँव का घर" कविता का भावार्थ या सारांश लिखें | [13, 15, 17, 19]

उत्तर- "गाँव का घर" शीर्षक कविता ज्ञानेन्द्रपति जी के द्वारा रचित है। यह कविता गाँव के बदलते रूप को दिखाती है। इस कविता में कवि अपने बचपन और गाँव के घर को याद करते है, जहाँ बहुत प्रेम, परंपरा और सम्मान था। पुराने घर के जिस कमरा में बहु रहती वहाँ बुजुर्ग लोग अकसर खाँसकर आते थे। गाँव में ईमानदारी और न्याय का माहौल था। अब सब कुछ बदल गया है। अब पंच परमेश्वर की जगह भ्रष्ट पंच आ गए हैं। गाँव में अब लोकगीत नहीं गूंजते, लालटेन की जगह टीवी और बिजली आ गई है। गाँवों में अब सच्चाई, अपनापन और संस्कृति नहीं बची है। वहाँ अब शहर के जैसा दिखावा, झगड़े और गंदगी फैल गई है।

2. ज्ञानेन्द्रपति ने अपने गाँव को किस-किस की जन्मभूमि बतलाया है? [2019]

उत्तर- ज्ञानेन्द्रपति ने अपने गाँव को कई चीजों की जन्मभूमि बताया है। गाँव को उन्होंने ईमानदारी, सच्चाई और परंपराओं का प्रतीक कहा है। यह पंचायती राज, होरी, चैती, बिरहा, आल्हा जैसे लोकगीतों और सांस्कृतिक मूल्यों की जन्मभूमि है। लेकिन अब यह सब बदल गया है गाँवों में अब शहरों जैसी चकाचौंध और दिखावा आ गया है।

3. गाँव के घर की रीढ़ क्यों झुरझुराती है? इसका कारण है? [2021]

उत्तर- गाँव का घर" शीर्षक कविता ज्ञानेन्द्रपति जी के द्वारा रचित है। कवि कहते है कि गाँव का पुराना सांस्कृतिक जीवन अब खत्म हो गया है। वहाँ अब न लोकगीत हैं, न परंपराएँ, न ही पहले जैसा प्यार और अपनापन। उसकी जगह अब झगड़े, अदालतें और दिखावा आ गया है। इसी बदलाव के कारण गाँव की रीढ़ (मूल पहचान) हिल गई है और वह झुरझुरा रही है।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. पंचायती राज में जैसे खो गए पंच परमेश्वर बिजली बत्ती आ गई कब की।"

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति ज्ञानेन्द्रपति के द्वारा रचित 'गाँव का घर' शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि, पहले गाँव में पंचों को "परमेश्वर" कहा जाता

था क्योंकि वे ईमानदारी से न्याय करते थे। लेकिन अब पंचों की ईमानदारी खो गई है। जैसे गाँव में बिजली तो आयी, पर सही से नहीं आती वैसे ही पंच हैं, पर अब उनमें ईश्वर जैसा गुण नहीं रहा।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1.'गाँव का घर' कविता में कवि किस घर की बात कर रहे हैं? [2015]

उत्तर- इस कविता में कवि अपने गाँव के पुराने घर की बात कर रहे हैं। अब कवि शहर में रहते हैं और उन्हें शहर की जिंदगी बनावटी लगती है। पर गाँव भी अब पहले जैसा नहीं रहा वह अब अपना असली पहचान खो चुका है।

2. 'गाँव का घर' कविता में पंच परमेश्वर के खो जाने को लेकर कवि क्यों चिंतित है? [2013, 2020, 2023]

उत्तर- पहले गाँव के पंच निष्पक्ष और ईमानदार होते थे, इसलिए उन्हें 'परमेश्वर' माना जाता था। लेकिन अब पंचायत में भ्रष्टाचार और पक्षपात आ गया है। इसी के कारण कवि चिंतित है।

3.'गाँव का घर' शीर्षक कविता में किस शोक-गीत की चर्चा है? [2025]

उत्तर- कवि ज्ञानेंद्रपति इस कविता में आज के समय के शोक-गीत की चर्चा कर रहे है। क्योंकि अब होरी, चैता, बिरहा, आल्हा गीत नहीं बजते है। यह जन्मभूमि लोकगीतों की है, लेकिन यहाँ ऑर्केस्ट्रा बज रही है जो भावहीन और शोरभरा है। जो दिल को नहीं छूतीं है।

4. कवि की स्मृति में 'घर का चौखट' इतना जीवित क्यों है?

उत्तर- कवि की स्मृति में घर की चौखट इसलिए इतना जीवित है क्योंकि उसका बचपन उसी घर में बीता है। उस चौखट से कवि की कई प्यारी यादें जुड़ी हुई हैं। वह चौखट केवल घर में आने-जाने का रास्ता नहीं है, बल्कि संस्कार, परंपरा और अपनापन की पहचान है।

5. 'आवाज की रोशनी' या 'रोशनी की आवाज' का क्या अर्थ है?

उत्तर- इसका अर्थ है - सच्चाई की आवाज और अच्छाई की रोशनी। ऐसी आवाज जो समाज को बदल दे और अंधकार को मिटा दे। और ऐसी रोशनी जो अन्याय के खिलाफ बोल सके।

6. सर्कस का प्रकाश-बुलौआ किन कारणों से मरा होगा?

उत्तर- पहले सर्कस का प्रकाश लोगों को बुलाता था, लेकिन अब टीवी, मोबाइल, और दूसरे मनोरंजन के साधनों ने उसकी जगह ले ली है। इसलिए वह रोशनी अब किसी को आकर्षित नहीं करती है। अब वह मर गई है।

7. 'कि जैसे गिर गया हो गजदंती को गंवा कर कोई हाथी।' - मर्म स्पष्ट करें।

उत्तर- हाथी के दाँत उसका शोभा होता हैं। उनके बिना हाथी अधूरा लगता है। इसी तरह गाँव अब अपनी सुंदरता और सांस्कृतिक पहचान खो चुका है। वहाँ अब न भावनाएँ हैं, न अपनापन और ना ही प्यार है।

8. स्मृतियों का हमारे लिए क्या महत्व होता है?

उत्तर- स्मृतियों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है- ये हमें सदा अपने अतीत और जड़ों से जोड़कर रखती है ये हमारे जीवन के भावनात्मक पल होती हैं, जो समय बीतने के बाद बहुत याद आती हैं।

9. चौखट, भीत, सर्कस, घर, गाँव और बचपन के लिए कवि की चिंता को आप कितना सही मानते हैं?

उत्तर- हम कवि की चिंता को बिलकुल सही मानते हैं। पहले गाँव में अपनापन, परंपरा और संस्कृति थी, पर अब सब बदल गया है। अब वहाँ सिर्फ दिखावा, टीवी और शोर-शराबा है। ये बदलाव सबके लिए चिंता की बात है।

👉किसी भी सहायता के लिए आप कॉल /व्हाट्सएप कर सकते है।

Helpline No.
7700879453
6201320598
9234080284

Motivation Channel Link :- 👇👇
https://youtube.com/@sanjaysir_ka_ladla

Full Course App Link :- https://play.google.com/store/apps/details?id=co.dishaonlineclasses

👉10वीं के लिए :-

Youtube: https://www.youtube.com/@DishaOnlineClasses

Telegram: https://telegram.me/dishaonlineclasses

Disha Online Test App:- https://play.google.com/store/apps/details?id=com.disha.testborad

NOTE – हम आपके लिए दिन-रात मेहनत कर रहें हैं, परन्तु सफ़लता आपके मेहनत पर निर्भर करती हैं |

WhatsApp Channel - https://whatsapp.com/channel/0029Va5QfNLJ3juxlfK31A1Q

11th & 12th Science के लिए YouTube Channel 👇👇👇
https://youtube.com/@DishaScienceClasses?si=9nhYwSP1atdrZypp

11th & 12th Hindi और English के लिए YouTube Channel 👇👇👇
https://youtube.com/@dishahindienglish?si=nxq9gu5D7NvNvPQd

11th & 12th Arts के लिए YouTube Channel 👇👇👇
https://youtube.com/@DishaArtsClasses?si=xYfGdGgMkDC3q0wd

11th & 12th Commerce के लिए YouTube Channel 👇👇👇
https://youtube.com/@dishacommerceclasses?si=aqILGXaeOqLNfHrt